

65/1/19 6-4
P.M.

30.05.1964
3/5/64

बलचनमा (21)

(मैथिली)

NOT FOR ISSUE

मूल लेखक

ना गा जु न

मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता

पत्रांक :

मिथिला सांस्कृतिक परिषद्

प्रकीर्त कार्यलय :

१०, बालमुकुन्द मण्डल रोड,

कलकत्ता-३

विद्यापति-स्मृति-समारोह १९६६-६७

भाग : ४) टीका



प्रथम संस्करण : १९००

प्र. फरवरी, १९६७

Mai-256

घटना समय : १९३७ ई. के शुरुआत

लेखक :

कुमार प्रियदर्शन

पुत्री, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,

कलकत्ता-३

१

जखनी हम चौदह बरखक रही तखनिये हमर बाप मरि गेल । पलिवार
मे माट, दाइ आ छोटी बहिन छल । एकटा छोटी-छोटी घर छल ।
घरक अगुथति में नान्हटा आंगन छलै, बामा कात आठ-दस धुर बारी छल ।
ओहि बारी मे मरि साल किछु ने किछु उपजा होइते रहै । बारीक पाखू
मे गिरहयक इनार छलनि, आ इनारक सोंका मे खेत । दहिना कात
कनिके हटि कऽ हुनके लोकनिक पोखरि तेहो छलनि ।

गिरहयक जमीन मे बसल छली । हमरा अपना जिनगीक सबसँ
पहिलुक बात एखनियो धरि कनी-कनी नोने हवे । मातृकक दूरा पर
हमरा बाबू केँ एकटा खम्बेसी लगाकऽ बान्हि देले रहै । एही सँ सिखा
परि कौच करची सँ फोड़ि देले रहै । कतौ-कतौ देहक छाल नोचा गेले,
मारिक चोट सँ । आँखि सँ नोर टप-टप बहिकऽ गाल आ ज्वाती होइत
नीचा बहल जाइत छलै । सौंसि देहकारी मजीठ भऽ गेले हमरा बाबूक ।
घोरवे दूर पर छोटीका मालिक चौकी पर जमराज नाहित बैसल रहथिन आ
दहिना हाथ सँ मोड़ केरेत रहथि । हुनकर लाल-लाल घसल-घसल आँखि
देखिकऽ केकरा मे डर हो जेतै । हमर दाई थर-थर केँपेत मालिकक पए
पश्ये छलै । आ बकारि सोइते छल, मालिक वो.....मालिक.....छोड़ि
दियो वो मालिक..... लतुआक भ्रान छूटि जेतै ओ मालिक दोहाइ

बलचनभा

२

सरकार के.....अहीं माई बाप छी, छोड़ि दियो। माय के कात
कनेत देखि हमहूँ मुकुर-मुकुर कानेड लगली। हमरा छोटकी बहिनक त
उरें पाने सुखि गेलें।

कनीकाशक बाध बुकलियै जे हमर बाधू मालिकक माय सँ दूटा किमुन
भोग आन तोड़ि लेजे रहै। थौंको किमुनभोग खाव मे चोश्ट माहित व
नीमन लगे छै। आम तोड़ैत कियो ने देखले रहै, बाबू बखाड़ी के दोग
वाम मोड़ैत रहै तखनिये कियो देखि लेजकै आ चुगली छारि गेलै। ए
बात पर मकिला मालिक तानले आनि मऽ रोखलिन आ.....।

हमर बाबू मरि गेल। दाइ केँ चोड़िया जर लगैत रहै। किछु मालिक
सँ लऽकऽ आ किछु इमहर-उमहर सँ ताकि-हेरि कहना फिरवा-करम भ
गेलै। हमरा गरदनिक छतरी कहना टूटल। माइ या दाइ दुनू गोटे
विचार भेलै जे कोनो मालिकक पट्टी मे हम चरवाही करी। दाइ मइ माने
ओ कहै एखनिये सँ काम में जोति देवही तऽ करैत दूटि जेतै। मुदा माय
कहलकै—एखनिये सँ घरक काज-फिकर नइ करतै तऽ अथारा माहित
करतै।

किछुए दिनक बाद हम छोटका मालिकक मर्हिक चरवाही करै गेली
छोटकी मलिकाइन केँ हमरा रखवाक कनिकी विचार नइ दकनि, ओ घर मे
अडबन्जर कऽ बेलखिन। हमरा देखिये कऽ ओ हाकरोल करऽ लगलखिन
ई तऽ बखाड़ी छून्छ कऽ देत। अकादाहन पेट छै एइ हॉङ्का। डेढ़ सेर
दिन मे छैत आ डेढ़ सेर राति मे। सौंसे देइ हॉङ्का के पेये छै। पेट छै
की कोठि से नहि जानि। मैए भै.....मैए.....।

हमर दाइ हमरा दिस दुलार सँ ताकि कऽ मलिकाइन के कहऽ लगलनि—
से नहि कहिओ मलिकाइन। हमर बलचनमा बड़ कम खाइये, रोटी, मकई,

ते, आम, काजल जे देवै खा लेत। खेवा-पीवा मे कनिको नखेदिया
रखै।

हम एकटा बिस्की पहिरले रही। बिस्की दिस तकैत मलिकाइन
देखलिन—आ.....देख, कपड़ा-तपड़ा हम ने देखै। ई मुनिकऽ दाइ
नर डंतऽ लागलि।

अइपर दाइ कहलकैन—अहाँ नइ देवद तऽ के देतइ? अहीं आउर के
अइठ-अइठ खा कए, अहीं आउर के फेरन-फारन पेनिह के हम सब अपन
कानगी सुवस्त करइ छी। अन देवद आहाँ त पोत माँपऽ खातीर सुत अनतऽ
कतऽ सँ अउतइ?

अइपर मलिकाइनक ओलि-मुँह चमकऽ लगलैन। दौत वसुफक फूल, ठोर
मलिकोड़क पाकल कइ—लरो, बड़ सुजरि रहथिन मलिकाइन।

एकहठ आउर केँ चिवा-चिवा कऽ बजलौइ—खायक दिखलन, धड़िया
थोती बिअठन, ऊपर सँ दुअन्नी! बापरे! एसे के देतइ? सब दा काज
विखावक पड़त, दुकबइत-दुकबइत भगज चालनि भ जेत।

बादी फेनू मलिकाइन के पैर पऽ लेलकइन आ बाजलि—आइ सँ अहीं
बलचनमाक माए-बाप भेलअइ! अहाँक अइठ खा कऽ एकर दिन घुरतइ
मइतमाइन।

तकरा बिहाने सँ हुनका ओइठौँ हम काज करऽ लगली। ओना रहिअइन
तऽ मइथिक चरवाह, मुदा आनी कते तरहक काज कऽ दिअइन। मेनाकेँ
तऽ मइथिक चरवाह, मुदा आनी कते तरहक काज कऽ दिअइन। मेनाकेँ
तऽ मइथिक चरवाह, मुदा आनी कते तरहक काज कऽ दिअइन। मेनाकेँ

मालिकलोकनिह ई धरैना कोनो जमाना मे बड़ पेय रहइन। आव जमी-
नारी तऽ कम्मे तन छलइन, मुदा बाजब-भूकन उएह। माल जाल चारि पट्टी
बलचनमा

मे वॉटल । हवेली से कराक-कराक । गाछी-बिरछी, बंसवारि, कलम, खदोरि,
पोखरि, परती-परौत—एतवा भरि सार्निप रहइन ।

छोटजन मालिक कहीं मनेजरी करइत रहइथ । मलिकाइन बड़का घरक
बेटी । हुनका लेखे बिना दूध-दहीक खेनाइ आ गोबर धावल मिठनाइ एक्के
बात । से, ई गुजराती महील दू सप् में ओ मजबूतने रहथि । सेवा सेवा स घोइक
नहि, आ पाड़ी गेल रहइ मरि । तें थिमुकिये गेल रहइ । दुहापरक हाइ
अक बक करइ । चरबाह पड़ा क कटिहार चल गेल छलइन । तखन कोनो
दुसाध रहल । ओकरा एकटा सोआरिन सँ हेम-हेम भइ गेलइ । पकरल गेल
त बहुमारि लगइ । मलिका मालिक बइला देलखीन ।

आब तेलर चरबाह रहिअइन हम ।

अन्हरोखे महील खोलि दिअइ । पीठ पर पड़ि रहिअइन ।

पहुँची में मोहरिक छोर लपेटि ली । भूत-परेत त सइजे महील लग आवए
नइ ; तहन खेतक फसिल चरि जाइ त अलवत्त । चरबाह केँ एकरे डर, आन
कथूक डर नहि । छुदा हम जे चरबाही पैली से नास रहइ जेठक । बाध-बोन
खाली । चित भइ कइ महिसिक पीठ पर पड़ि रही, ओ अपन मुँह गारने
रहए ।

किछुए दिन भेल हेतइ कि ओ हमरा चीन्हइ लागल । अइ सँ पहिने माए,
दादी आर देवनी, इएह तीन गोटे हमर अपन रहए । आब नहिअओ हमरा
लेखे अपन समाज भइ गेल । छाल-लाल पैध-पैध ओकर अँगि, भकलहा हाँस
अउखन हमरा बितरल नइ अइछ ।

भैंसी चरा आबी त बासि भात खाइ, कहियो कहियो एक जव चाउर
भेटए त सएह भिजा क फाँकी । कहियो जन-बाँझनाए मइआ, की खुदीक
रोटी पकइ तइ तही से सँ लोड़ि क आधा चाहे एक कोन हमरो घरि लागए ।

तखन धुलुर केँ कोरा लिअइन । दुबकटू रहथीन, से बड़ खिसिआइ ।
सेना केँ मभोइथि जे की कहिअइ ! मलि काइन केर दू टा जेना मरि गेल रहइन,
ई तेसर कोरा मे रहथिन । आब चारिम हेवा लए रहइन । नहिराक एकटा
दुसइया खबानिनी रहइन से तकरो जेना हम बहिण रही । बाँहि बदै करइ
लागए तइ हम धुलुर केँ लइ जाइ कइ आनारा पर चइवा दीअइन आ दलान
दिम जल आबी ।

काजक डरें छीह कइथा कीदिआ :—मलिकाइन चिचआइथि, आ से
अही काने हम सूनी । बइगने तइ काज चलनिहार नहि ! लुरपी आ छिटा जइ
कइ पास करए चइदाइ । वइगइला खरमइल । आरि-धुर चइचइ चइचइ जरइल ।
भरि बाध ओन्हराइ तखन जाइ कइ पथिवा-आध पथिवा पास । घूरी तइ आवइ
मे कोनो दिन मइ बेरी भइ जाए । तहिआ गिरइथनी ललकि सइथि जे
मार जानिबिडा केँ । कतइ गिखतर चल गेल रहए ? कोन ठी बइथि केँ कोन
आपक संगे कलही मजइ बले हए ?

कहियो कहियो चारि चटकम भइयो रहइ । तइ दिन बेरिआ घरि
कनगड़ी लहरए.....

खुशी रहथि त सुखाएल-टटाएल पकमान, अमल आर पिलुआहा आम,
पुकड़ी लागल बही, माइक देवालि कोर भेटए । तइ पर कइथि की तइ एहेन
बस्तु तोहर एकइस पुरखा नइ देखेने हेतइ ! बुकलह !

नइहर सँ भार-दोर बरोबरि अचइन । खगता कथूक नइ, तईथी मालिक
परदेस ओगरने रहथि । बड़ मे जमा करइथ । आसरम छोट आ खर्च तापल-
जोखल । गइना-पुडिया चर्तन-बातन, नूआ-बस्तर, रेतम-पटोर सँ चारि टा
धाकस भरल छलइन, तइथी नहा-सोनाक बीच आंगन मे ठाढ़ि भइ कइ मलि-
काइन निजइ बीनानाअ-दिनकर सँ अम-बीत मकधीन्ह ।

महीन हम मोन से करावी। गाड़ी मे, जचइ-जचइ गामक चरवाह सभक छुटान होइ। हमहु आइ गण्डलो मे बेसी दिन भरि अनधुआर नइ रहलई। एक्के बतारोक तउ लोक चरवाही करइत रहए। अढ़ाए पहर राति मे से महीन खासिअइन से एक्के बेर सुन्हारि सांग कइ अविअइन। अपन-अपन दुख बिसरि आइ, आ खुन खेजाइ हमरा आउर। कउखन कउड़ी, कउखन लत-घरा, कउखन कउआ दूही कखनी बागमाटी आ मोगलछान, कखनी कलम मे गाछ पर चढ़ि कइ दाल-खाती..... किमिम किमिम केर खेल हमरा आउर खेलाइ। मोत वाहि कइ बइसी, सगुरी कका बइली ठटा छिरसा कहए, कान पाधि कइ से सुनइत जाइ। चर-चांचर सँ केसवर-कउहर-सादख जमाकि अनइत जाइ, से तोहि सोधि कइ लाइ। एतलोक आगि मे तरका कइ अन्हइ माछ पकावी त ठेही भांग जगावी कहिआ-कहिआ। भरि गामक बाबू-भाइया लोकनि केर अदगोइ-अदगाइ हमरा आउर करिअइन। नीक-अधगाह सब कथुक सभा होइ।

सगुरी रहइय नाटे। जातिक बाबुक। कान दूनु सुक्क रहइन, कदार छोड। ओखि देव तेन मुदा बसइ। अपना भालक सेवा ओ खुन मान लगार्के करइथ। चरवाह सब हुनका अपन पिता-निसामह जकाँ मानइन। मइइ कहिआ कोना भौली के मारमे होइयैन, से हमरा लोकनि केँ कहाँ देखल, हुनका भौलीक ओखि में कहिआ केओ जांची नइ देखने देखिन। भरि छावा पानि मे डाढ़ कइ कइ दूमिक नुहो सँ ओ महिलाक पोट-पेट मलइथ।

एक दिन हम दुगहरिआ केँ सगुरी ककाक ओलए भेलई। बइका मालिकक बयान बेश पैत रहैत। सोइह या बइद आ चारि या भैस। तकरा लए तेन गो चरवाह। बूढ़ा कामहि एकचारी मे रहइ छल। देखलिअइन हुका गुरगुरवे छाय हमरा। बू धौटकी मारि केरवला हुका पिअइ छल।

बलचनमा

मजरिक इमारा सँ लग मे बइठइ कहलनि आ फेनु पुछलइन जे सोरा नहींत के ई दोसर भास भिकल की ने।

हमरा अजगुल लागल। कहलिअइन—कका, तौ कोना ई भास बुकि मेलइक ?

बइतर पतरकी मोछबला हुनक उपरका ठौर फइल भ भेलइन, बजला—रओ, चरवाहिए मे त हमरा आउर के जिनगी गुदस्त भेल, एतबो नइ धुकवइ ?

हुका जम्हेलीक भरे थोछटा देलखीन, चीलम अउनिह केँ फेनु बजला—ननिहरसँ भासिक आदल रहियत त बाइसन बरस रहए। तोहर बाप लालचन तोरे एती टा छल हेतव.....आइ ड हे ड ड, बुकलएँ ? अइवेर महीन तोहर पाकीतरे बिपतव.....”

तखन मइइ लउला आ बुढ़िआ भैत लग जा के धनदिस बइठि मेलइथ। पहिनी मजरिसँ अठउड़ी बीछइ लगलखीन।

सगुरी कका हमरा बड़ मानइथ। हमरो हुनकर टहल टिकोरा मे बेस मोन लागए। ओना हम रही बड़ गोआर, ओ धानुक। मुदा से नहि कहिओ धूमि पइल। खाइ पिअऊ कोनो चीज-बउल देखेन जँ हवेसी सँ भेटइन त वइ मे सँ हमरा लेल किछु रखये टा करइथ।

मभिला मालिक के छुटी कम्मे होइन, तइओ छ मास पर छुट्टी कइ कइ दू चारि दिन रहि के बिदा होइथ त इसटीकन बिछौना बिस्तरा लउइत-बइठइत कहुना हमही इअ अविअइन। गाम सँ मधुवानी अढ़ाए कोस पकिआ। घाड़ दूटि जाए एक लेखे। आमे पसेने मइत जाइ। आ तहन गाड़ी लाटफारम सँ चुतकए लगइ त मालिक दू गो पैता हमरा दिश बोग दइथ।

पइसाक मूट्टी, आ पइसाक बोड़ी। कैकेत-कुकेत गाम आओ घुरि कइ।

बलचनमा

हमर माए अइ घर मे बिअहुता भऽ कऽ नइ आएल रहए, सनत्थ भेल रहइ । बाबू कमाइत रहइ डाका दिस कतउ, पाछू ता जिनगी मामहि पर रहल । सुइल त हमरा बाउरके कट्टा चातेक खेत दऽ गेल । ओहू जमीन पर ममिला मालिक नजरि गबओने । कहिया कतऽ दन नारह गो टाका धेने रहपीन तादा कागत पर अउँटा छाप लऽ कऽ । से सुदि दइत दइत बर हमही सब लिखा गेली, कर्जा भहि लिखाएल हओ भाइ ।

मलिकाइन दुअन्नोक हिमावें भरि सालक दरमाहा डेढ़ गो रुपइया भागी पाछौं देयिन तऽसे की होअए । जइकालाक राति परलवकेर जनस बजवइत आएए । सभीं था चउमासा त कोनो सगैं खेपि सी, मुदा जाइ कटनाइ पहाड म जाए । ओछावए खातिर दू आदी नार पोआर आ देह काँपए खातिर पुदरी केधरी.....पतको जँ नइ छुरए त पूसक राति जमराअक लहोवरे बहीन । चूड़-धुवौं लेल चाही गोइटा-करमी । से तऽ बेजेक माल-जालक हेतइ नहि । हमरा घर मे माल जालक नाम पर दू गोठ बकरी डा छल । हँ, बकरीक पेंडारी जाइकाला मे खूब काज अइइ ततथा भरि मोन अछि ।

बुढ़िया पोखरीक भीड़पर बड़क गाछतर कोलहु डाइ होइक । बाँसेक खाभखमेली, बाँसेक मादि, बाँसेक चरेडी.....पतहर तँ छारल बासीक चार, मास डेढ़ मास लए कोलहुअइ । तहिआ ऊँइख खूब पेरल बाइक आ खूब गूड बनइ । हम दूनु भाइ-बहीन कोलहुआव मे बेगी काज रही । वरद हौकि दिअइ, कोलहुक ओरतर कुतिआरक टोनी बइत रहिअइ, भट्टी मे पतली कोकिअइ, लखीड़ि लखीड़ि क कड़ाइक पैर साफ क दिअइ.....बरला मे खूब ऊँइख चिबावी, रस पीवी, गूडक डाही खाइ आ राति कऽ भट्टिए लग गरमा क सूति रही । कहियो कहियो तादी ठठा कऽ लए जाए लागत त कैओ बानइ—

बलचनमा

“छोड़ि ने दही, घर से कोन दोहाला छउ जे अइ जास मे ओढ़िदहिन, भने तऽ सूतल छउ ?” जइकालामे मास दू मास तब साल अहिना चलइ ।

एक दिन ममिला मालिक माए कें चाल पाइलखीन । पाछौंलागल दादिओ गेतइ आ हमहु गुनलिअइ । इलानपर थढ़का चढकी, तहपर पठिया ओलाओल । मालिक तऽ छलाधे, गामक बूढ़ा पण्डित सेहो रहइथ । मालिकक हाथ मे पितरिआ डाइ बला सरीसा छलइन । सुपारीक कतरा पण्डित जी दिस बढवइत बजलाह—बलचनमा जा जील ता हमरा सवाल दैत रहल आ कमे एकरा लोकनिक रुखि तऽ देखियो...

पण्डित जी कतरा कोकि लेलइथ, दुटलाहा कमानी बाबा चचमा नाकपर तँ छटा कऽ कपार पर चढवलैथ । कनीकाल भरि हमरा दिस तकइत रहि गेलाह । केनू कहलखीन—जशोधर बाबू, अइ ज्योडाक त बुटी बुटी चमकइ छइ । ईह, तकरए केहेन छलुर-छलुर !

ममिला मालिक गुछुआ कऽ सूखी डोलउलइथ । सुपारी चिबवइत बजलाह—हँ गुरु, भारी हरमजादा अछि । ओइ दिन भोजपड़लवाला ठाकुर आएल रहथि । खवास कने दुःखित पदि गेलइन तऽ कहा पडोकिअइ जे जोति दहुन आवि कऽ से नहिए ने आएल बदमसवा !

हमरा दितस दादी बाजलि—जाँतव पीचव तँ चेतनक बुते ने होइत, बालचन तऽ कोलहुका देलह थीक । तहपर भरि दिनुका थाकल-देहिआएल, राति कऽ की कोनो होश रहइ छइ गिरइथ ?

मालिक डटलखीन—“चोप ।”

पण्डित जी नजरि नचयैस बजलाह—“राइ एबं पवित्र” मुदा मालिक कें तऽ अपन गौटी कहुना लाल करवाक छलइन । मिठबोला बनिमाएकें कहए लगलखीन—बलचनमा-माए, तौ तऽ बनितइ छैएँ, बेर-कुबेर तीरा लोकनिक

बलचनमा

खातिर हम कहियो अपन पाएर पाछों नहि कएल। तू केर काज पढ़लख, तऽ चारि देखलख, पाँचक काज पढ़लख तऽ दस। पलिवार जेहने अपन तोहरी पलिवार हमरा लेखें तेहने। तखन की तऽ काज-बरोजम भीड़-भाड़ ने कखन तोरा समक अमेला-कुमेला सेहो होइ छइ- से नहि, मुदा महल-आ बहिशा दूनु दू नइ होइ छइ, होइ छइ एक्के। आन केओ काज नइ खोजत, कम-फुका गुदक कोन-कमी ?

तहन पेनु हमरा अपना खग बजा लेलैथ, पीठ-पाँखुड़ पर हाथ फेरऽ लगलइथ। माएके कहलखीन—बलचनमा-माए, तोहर दिन आव जहिएर घुरतइ। बैठा कमा केँ टाक लगा देतइ। दुष धोइवे दिन रहलखए।”

माए असबलकक टाड़ी भेल ठाड़ रहए। जोकरा ई बुझइ से ने अवइ जे मालिक कोन नाटक कऽ रहलैथ अए। दादी गुम-गुम छल। हमहू रही डेहरलै। पण्डित तमाकु चुनबैत।

पण्डितजी बजलाइ—जे बहिशा महलोक हुकुम मानए ओकर जनम पेर बहिशा भऽ कऽ नहि होइ। आक-तमाक की छीक तऽ नाइट छीक। अइए जतथा उपकार होअए ततवे फल।

तखन मालिक एक बेर हमरा दिस तकलैथ, एक बेर माएक दिस। कनी काल रहि बसलैथ—काल्ह छिक्क बुध, परसू बिरइसपति, खजठली चलिहें कनी.....।

हमरा घरकेँ पच्छिम मालिकक भीठ खेत ‘तिनकीनमा’ रहइन। कडा हुइएक हमरो जमीन आमहि रहए, छोटकिनमी कोली दूनु मिला देला से चौकोर भऽ जाइत रहैक। मालिक केँ ओहि जमीन पर नजर छलइन।

माए हमर गुम्मे रहल, दादियो। हम तहिआ ई सब किछी बुझअ नहिए। तमाकु धुकरि कऽ पन्नीजी बजलैथ जे ओ जमीन राखि केँए की करवे।

बलचनमा

कहियो चारि सेर मधुआ, कहियो चारि सेर सुथनी, कहियो पधिया-आध पधिया अरुआ....। हम तऽ ओइ खसरहा कोली मे कहियो हरिलरी नइ देखलखए !

दादी मालिकक पाएर छानि लेलकइन, कलपए लागल—बोहाइ सरकार केँ, ललुआक अरजल जथा आव इएह टा रहि गेलइए। एमरी छोड़ि दिअल मालिक ! अहाँ आउर के कधीक खगता अइछ....

मालिक हूँ हूँ हूँ करैत अपन पाएर हटा लेले रहइथ।

हमर माए कहलकइन—ई जमीन घरक नगीच पड़इ छइ। धियो पूता चारि दाना छोट बह छइ त कुछो ने कुछो भइए जाइ छइ। बदला मे कहई बनतऽ दू कडा खेत देखिन से जाऽकऽ उपजतइ ? दस बरखक टेल्हक बुते कोनासे सभरतइ, ईरे कहलथ ?

मालिक लठला। बेबालक खुट्टीमे चोला टाकल रहइ, तइसे नीमक छडिका बहार कऽ अनलैथ। दांत खोचइत बगला—हम सबटा डोक-ठाक कऽ देवउ। एते खेती-धाड़ी होइसे छइक, तोहर दू कडा रोपल जेतइ तेहो कोनो दिन पूछि कऽ ? हर-बड़इ, बोनि-बोआ जे लगतइ से अगहन-पूसमे दऽ देल करिइइ।

हमरा गोक जकाँ मोन नइ अहि जे कोना माएके राजी कऽ लेलखीन मालिक आ कोना लिखा पढ़ी भेलइ। ओ दूनु कडा खेत धरि मालिक केँ भइए भेलइन। बदला मे धानक खेत के कहआ जे अर्धठाक लो पुरनका निशान परजन्त नई आपस भेल।

मालिकाइनिग ओइहाँ काजक कोनो कमी नहि। अरि दिन किछु ने किछु लगले रहइन। हम कनिको बड़ो, से खबलिनिजा केँ नइ सोहाइ। ओ हमरा कखन दावत कहए, कखन भकोल। ई खवातनी मालिकाइन केर

बलचनमा

लोक ओकरा मलिकाइनिक ताजी कुकुर कहइक। से, ओ मडगिआ जखन
अवाच-कुवाच कहए, तहन हमर रोइया लहरए लागए। ओखन गात लीइ के
पढ़ाए तऽ हम ओकरा खोहारी।

पछाति दुहनाइओ लीखत, लवुरीकका अहू मे हमर गुरु भेलइय। हम
पाड़ीक मोहें दूध छीइ दिअइ से मलिकाइन के नइ नीक लगइन। नइहू
खवास सँ अपन भौली दुहावऽ लगली तऽ हमहें मंदिआ देखिअइन। माल रहइन
हुनकर आ जूति चलेत हमर।

मास विनिएक भेल हेइय की पाड़ी भेलइ मरि, से के मडत बेचारी
जुकरए। की कहिय...हमर कोन साथ? जहन बाबा करिसेसरक रहे मोन
रहइन तहन आन के की करितइ? सुवा एगो पात कहि बइ छिय...हम आ
की लवुरी काका दुहइत रहितअइ त पइहू बेरवाद होइतइ? किन्तु नइ!
महिराक छलइन, बड़ बलगरि। देखवामे बेश, सुमचामे पूढल थारी। हुन
बाँहि पर बसुली बजचइत भगमान मोदल छलखीन। पहुँकी मे चरि चरि टा
लहडी, पाएर खासी। सुति-पति से कयकाक करइत। चाकर पादिक सजा-
खोल गाड़ी पेनिह कए जहन ओ बइराए तहन बड़ लीच लगइ लोक के।
ककर नजर तहन ओकरा बिल नइ चउइ। अमकर तऽ की कहिय मलिका
मालिकक नइहू खवास सेहो बकर-बकर सकइत रहि जाइ ओकरा बिस...

नीक-निकुत चीज-बउए मालिकक ओइ काम जहिआ कहिओ खेने
हेवइन, तहिआ अइते कोइड। आव अंडे खेवाक रोक आम भऽ सेलइए।
हमरा आउर अपना बूकऽ लगलिअइए के ऐंड खेनाइ महा लराप काव
शीक। सुवा पहिने ई ग्यान नइ रहए हमरा आउर के। अपना गानक
धानुक, गड़गोभार आ केओट के बाबू-मइभाक ऐंड खाइत हम देखने छी।
आब सुवा हमरा आउर कौनो बाबू मइभाक छूठ नइ खाइ छियइन।

बलचनमा

पाहुन-पइक अवहन तऽ तुलसीदलक चाउर बइराइ, रऽहु—मोदनी
पिठबल जाइ, कुतरटोलीसँ मुलकी तरकारी अवइ, दूध-बही सहलहि।
भारक काते कात बीस-बीस टा चालीस-चालीस टा कटोरी। तिरहुतिआ
भलगावुआ आ बधुआन आउर के ओइ जइ खाइ-पिअक बड़ चहटकार।
अंड मे तने रास मे चीज-बउंस रहि जाइक जे दू-दू तीन-तीन सौंर हमर
पलिवार हुमचि-हुमचि कए से सब खाए। खाइत काल दादा कुवावए जे
सबओ ई थिकर कटहरक बड़, ओ थिकर रहूक पेटी, ओइ कात सहरबड़ीक
हुनिआ, एह! बड़ीक झोर केहन निम्न छइ। चटनी मे पुदीनाक पात
पड़ल छइ। दालि केहन सोनहर...सुवा अपना मलिकाइनके हाथे छोट
छइन, जेठकी बहुअरिया सकौ कहीं थार सेंडइ छथुन? पाहुन जइ लजापुर
गइ रहथि लखने पेट भरतेन।

काज-परोजनमे जेठकी आर मकली आर छोटकी सब बहुआलिन के ओइ
जइसँ हमरा आउर अइँठ-कूठ हँसोथि लावी गऽ।

पाहुन समक ओहो अइँठ गरिबइ के भागे सँ भेटइ। बात ई रहइ जे
मालिक जकौ बहिओके आव कूटि कऽ कए टा पलिवार भऽ सेल रहइक। हमरा
आउर मालिक-मलिकारए अपन बलराकऽ लेलेरही। छोटका मालिक हमरा
बलरा मे पड़ेथ। कहिओ कहिओ बाँट-बलराक ई सिमान टुटिओ जाइ।
से तहिआ होइ, जहिआ उपलैन-पुइन-विशाइ-दुरागमन आ सराध-बखी रहइन।

पुरनका हवेली बड़का मालिकक हिस्सा मे पड़इन। हिनका आउरके
एगो निसन्तान पिछी छलखीन, हुनकर हवेली बण्ड मण्ड पड़ल छलइ, महिला
आर समिला मालिक नकरे मरमति करा लेलेथ। छोट जन अपना कए ई
लवे कीटा तइआर करवने छलइथ।

ई हवेली खपड़वला पोखरा घाटन रहै। बीच मे फइल आउन। बूटा

बलचनमा

बखार से तही में उत्तर दिस डाढ़। मकानक सरगमीन सीमटी, पलखतर कएल। जहला केवार लोखीक। चारु कात चाकर ओसारा। बनिइन-पूख कीनमे दुसही-चउरा, हनुमान जीक धाजा गाइल। लाल पतकजापर फड़गवनीक सजरा महावीर जो सीवल, बड़का नाईइवला। पड़वारि दिस बहरेवाक रखा, बहार ईवाक दरवाजा के बन्न क देला मन्ता एक दोनरे संसार। दरवाजा सँ सटले छोर पर दूटा कोठरी। सोझा में बैरल मएदान। उतरवारि कात मालजासक घर। बीच में काठक नमहर लादि, तकरा दूधू दिस-दू-दूटा खुटा। कने हटि कऽ सीमिट केर लाल हीट। ई रहइ भीनिक खातीर।

बड़इक सेवा हरबहि करइन। हमरा जिम्मा खाली भैत। गाए एकी टा नइ रहइन। अकरा सामरथ छइ से मैसे रखइए, गाए रखताइ बलिदक काज।

हमरा मालिकक पट्टी में नगदी देल अमा रहइन। हुचा चानिक धीस हजार रुपइया गाछने रहइथ, बात सत होइ की फूमि, दुदा लोक तऽ से कहवे करइन। उपजा झोइन हजार मोनक। भादव-ओसिन से बखारक सुँह पूजइ, तहन केओदा-सवइया पर अकरा जेते देवाक रहइत से देखिन। किछु बेचवो करइथ। अइइया-पतेरी कहएक मेल के रखने छलइथ। एक बेर घूमभे कूदन मिसरक मतोमाठ धान देमऽ एलइन। अपने छवि छवि कऽ अपने रहइ। कहलकइन—तउलल छइ, मलिकाइन, सात मोनसँ बेशिअ अनलवँ हइन, तइओ ओखा शिअउ।

गिरइथनीक हाथ बामल रहइन। हमरा चाल पाइलइन। कहलइथ जे छीउन कामइतके बजा लवहिन गऽ, तउलिओ लेतउ आर डकमे डारिओ देतइ।

छीउन कामति केओठ रहइथ। मालिक कछा इतेक सेत देने रहथीन।

बलचनमा

बड़िजना छलछीन कामति। बारहो मास लागल भिइल देखिअइन। अवेर-सवेर, राति-बिराति, समए-कुसमए जहन परोजन पड़इन, तइखन मलिकाइन हुमका बजबा लेथिन।

छीउन कामति एलइथ। उतरवारिआ अलइसँ तराजू अइइया अनलइथ कौड़ बान्हि कऽ बइसला आर तउलऽ लगला—रामहि राम, राम...राम... राम; रामहि राम, राम राम दू; रामहि राम, राम राम तीन... की बीचहिमे बरामहनी नजरि नचा कऽ बजलइ—कौं हूँ, कामति, ओ अइइया कहीं थिकइन ई? कने ऊठथु, तकथुन गऽ।

ता ओमहरसँ गिरइथनी थिअलता जकाँ चमकि कऽ हइ-हइदली—वेय, आथ किए ने सुकठ। तखन अनपुनी-लछमी कहिकऽ, बनकर पाएर नइ धेने रहिअइ आ कऽ। बेर पर धान नहि देने रहितहुँ हम तऽ तऊँ से नाम के बरम-वध लगितइ। फेर नहि भादव अउतइ?

मसोमात गुन भऽ गेलि। आन उपाइओ तऽ नहिए रहइ।

धान तउलल भऽ गेलइ, दू पसेरी ऊपर सात मोन मेल रहइ। बेचारी के एक पथिआ धान फेनु लावऽ पड़लइ।

अहिना एक बेर करिमवक्ताके सेहो थिअमिलाइत देखने छिअइ। ओ हरबाइ रहइन। बोनि देवामे जे गइवइ मइवइ करधीन ते हो ओहिना मोन अछि। पुरेक लरम रउदा देखा कऽ बोनिबला धान डकमे रखबा लेथिन। तहन छिनका ओतऽ एकटा बात नीक लवहले रहइ जे बेगताँ पर रुपइया दू रुपइया लोक केँ भेटि जाइ, दस-पाँच पनरह-बीस लए ककरो घूरऽ नइ पड़इ। एहि सुदा बहुत कड़ा। जेद पाइ कखन, कखन इइओ पाइ ठेका देखिन।

बर्खा दू-एक अछार बइसाख बितइत बितइत हमरा अखारमे सहिआ भइए

बलचनमा

१५

जाइ, आग्न समझ पर खड़ी नई होइ छइ । रोहिणी मधुसूतन में धानक बीया
सँ ठाम बीम बाध बेल लखलहाइ तहिया । भिरगतिरा-अरवरा में अमला
रोपनी सनपन भइ जाइ । साधानक दुर्निमा धरि थनहर खेतक कनिओ टा
कोली कलक खाली नइ रहइ । कराइ तमारा भइ जाइ, ओहूमे मडव पड कइ
खेतियर निपिटिर भइ जाए । गहड़ि, गमहड़ी काटि कइ ओइ खेत में फाउक
रानि लेअए तहन दलान पर बइसिकइ पत्तीसी खेलाए ।

हमरा समक परगनामे नहरि नहि छइ । अखनपरि इन्हे भगमानक
भरीन पर लोक निमहल जाइए । कमला मइया ईसबइ छुथीन त पहिने
कनबितो छुथीन बेल ।

रागनी आर कउनो काल मलिकाइन नहरसँ जल महावइथ । ताकुति
राखइ तन विमिअवइ रहथीन । ठामहि कनी दूर पर मुसहड़ ठोली रहइ ।
गाल माथ, छोट छोट आँख, रिशरो लन नाक आ दिहक रजु छावर जकाँ
मुदा इमनदारी आर मैहनाति में मुसहरक मोकबिला आन कोनी जाति के नइ
कइ हेतइ नगनाओ आते अन्तइ नहिए पपवइ । ओकरा आउर पचीन बीस
समाक छल हएत । बुढ़-बुढ़क लेला त नहिए हेतइ । लग-पास में इत-
पाँच ठा नमहर वही आरा छलइ । अखाड़-माओन में जल-यानिहार नइ
हुमइ लोक के ।

खेतो क ताक रहइन त मलिकाइन माइएन भइ जाइथ । दाइल-नात, तइ
पर सँ अचारक काँड़ा.....गाहर फूलत जाइ, अइकी बइकी गो टोकना
चइइ, तीर-तीस चालीन-चालीस आदमी क मोवालगइ । गाड़ीपर सितलपाटी
भइ कइ तइपर तइ केराक पत्ता बिछा बेल आइ । ओइपर भात आ टोकना
में दाइल । चउतामे तरकारी, डलिया में अचार । बीच बाधने बान्हपर
गाड़ी ठाढ़ होइ । तइमें आउर जातिक मोताबिक करार करार पतिआनीमे

बलचनमा

दूधपर पइअर, छौतन केराक पत्ता पर अन परति देखीहिन । तरकारी आर
अचार सेहो । अइन सब भरि पेट दूरि लेअए तहन केर रोपइ लागए ।

मोन तइ होए हमरो धान रोपवाक, मुदा काज एमहर बढि गेल रहइ ।
मैसी आब एक गो नहि, दू गो रहइ । मिनपर चराकइ घूरी त बयान
खरबी । गोबर काटि कइ एकठाम जमा केने जइअइ, निछेस दोसर ठाम ।
मोतलाहा जगहक थाल काटि दिअइ । ऊपर सँ पथिया भरि बलुआही
माटि पलारि दिअइ । अइ तरहें मैसीक जागह केँ इन नयख राखी । गिर-
हथनीक भाइकेर घोड़ा रहइन, तेकरो लिहो हमरे सडाबइ पड़ए । लादिके
घो-घा कइ पथितर राखी । दलानक अखनइ खरड़ि दिअइ । खवासनी कोनी
ने कोनी काज में अहाँनहि रहथ—दलमनि ला, दोवान जो, नूआ खीच
रहीन, फहली के तीर पाईहिन, मसकला पीस, दब ने पइस, धान बहार कर,
चिड़ी खाया अवहीन, पत्ता काटि ला, पीठ खूनि बहून, बुलुरकेँ बुला लवहून
.....देखहीन केवन पतलो खरबइ छल कलम में, छुनइ छहीन बसबारी में
कीदन ठक-ठक छठइ छइ.....खवतिआ नथनहि रहए हमरा सहिहाल !
ने दग गो, ने बीस गो, रही त बलचनमा हम एक्के गो । मुदा ई बात
बुहनिहार ओइठाम केशो रहवे ने करइ ।

अइ खवासिन केर कोख जरल रहक, पिया-पूता सुनइ छिअइ मेवे ने
केलइ । छरकलही गाबए केहेन बीब । आर गबइत-गबइत खिलिया छठइ,
खिलिआइत ओहि पाँड़कइ कानइ लागए—

मास दू मास पर अहिना ओकरा भूत लगइ । तहन खन खरपए, खन
कूए, खन ढाल ठोकए, कोत्ता खोश क माउठ भइ जाइ, जीह थहार कइकइ
चिचिआइ.....हम काली नइबा थिकहुँ, बुढ़िया पीछरिपर जे गुलरिक
गाथ छइ तहीपर रहइ छियर.....ओझा छागर चढ़ा, ने तइ लउसे गामकेँ

बलचनमा

भूजि कऽ खा जेवत....

मलिकाइन कुमारी भोजन कबुला करधिन, रेशमिक अंचरा आर जोड़ा छागर से कबुला करधिन। हमरा कहयि, दामो ठाकुर के बजा अनहुन गऽ। दामो ठाकुर तानविरिक रहइथ। शाय फूक, पूजा पाठ, टीना टापर सब जनइ छलइथ। आलक रंग मे रमल प्रीती लवनी पेन्हइथ। कपार पर सितुरक बड़की टा ठोप। टीक तले बइथ लखइन के कोलि देलापर पाछु दिस डौड़ धरि चल अवइन। हाथी दौतक सोटीक माला से लाल रेशमी मे गोंथल दू टा मूढ़ा, आर लेकरा बीच मे बड़की गो बंदराछ। छड़ीक मूढ़ा तननवरक मुँह सम रहइन।

दामो ठाकुर राम से बहराइथ तऽ धिया-पूता आउर के बड़ डर होइ।

ठाकुर आवथि दछिनवरिआ घर मे हुनकर आसन जमइन। मलिकाइन सोकों नइ अवधीहिन। बड़का मासिकक वेटी जमजला रँड़ रहइ, आर नहिरे वलइ। देखवा सुनवा मे छुन्नतर, डाढ़ नाक, डेले ओंछि। से एहना समए गिरहथनी ओकरे बजवा लेथीन। ठाकुर ओकरे पुछथीहिन, ओकरे अदबधीहिन। मूक बीहरि केर माछि, तीन बखंक पुरान कूरा, चारि डोप गंगाजल, पाँच माछक सुवखल पत्ता.....एते रात चीज बखस्त भिज्जा क दामोठाकुर खवातिनके झाड़ु बरछि।

मलिकाइन ओकरा कीचा मे किसि क गेंठ द देथिन। छीतन आर कलतर घऽ-पकड़ि कऽ ओकरा ठाकुर संग राखि अवधिन।

विद्व जी मनतरा-मनतरा खबसिनिआक देह पर फूक मारधीहिन आ माछि फेकने जाधीहिन। हुनका अलिक इशारा पवइत देरी हमरा आउर पर खासी कऽ दिअइ, रइ जाइथ ठाकुर अपने आर खवातिन। केवाड़ बन्न कऽ कऽ बहार सँ जिविर चढ़ा देल जाइ। भीतर तखन साब-फूक खूब

बलचनमा

पेर धरि चलइ।

कती काल बाद भीतर सँ केवाड़ दकदकावधीन त एम्हर सँ जिविर खोलि देल जाइत। पामे-पमेने भीवल सिद्ध ली बहरायि आ बजधीहिन जे बड़ अबरदस्त भूत छलइ देन खवातिन केर, कोनो धरैने देह छोड़लकइए से हमही जनइ छी.....अछिन त बहराए नइ देखुन एकरा। जमजला, ता कृति रखि-हक क्रमे।

भूत लगइ त खबसिनिआक उहे पडइ होइये पडइ। मदवारिमे कमला-बलान आउरके होइ छइ। ने लान-थीज, ने डर-भर, ने मान-मर्दादा, ने धिरी-धामन, ने गोआन-परान, ने मैत-मैत, ने डर-ठेकान, ने थोर-धाम। बाढ़िक पानि तऽ ने आरि-भूर बूझइ। भूत की जिन बामे मउगी के देखतइ, थोकरा आउर के आन नइ सोहाइ छइ से त बुझले वेतइ। बखे मे दू एक बेर मलिकाइनिक आइन मे हमरा लोकनि ई तमासा देखवेटा करी।

एक बेर गिरहथनी अहिना ओकरा घरमे धन कऽ देलखीन तऽ भीतर सँ लगलइ केवाड़ दकदकावऽ.....तहन अनन्त बाबू बजाल गेलइथ। ईहे गिरहथनीक बिसिअवता छलखीन, देल हुनगर, बेस मोट डौट। केहनो बरसा मोझाके अनन्त बाबू पानि पानि कऽ देखीन।

हुनू तिअ धऽ कऽ केहनो मरलाइ सौंइ के ओ सए लगग पाँछा टेलि बजधीन। से, मलिकाइन केर परताप सँ ओइ धेर भूतोक सके हुनकर लटा-पटी देखल। बड़ी कालपर बनारऽ देलकइन।

गिरहथनी वैशीकाल हमरा आउर के भूतक ओ कुरती नइ देखऽ बइथ। कहधीन जे बड़ लोकक साझा मे भूतपिचासक तागैत चारि गूल बड़ि जाइ छइ। झाड़वला के खबसिनिआक तँछे अवगरे छोड़ि देथिन ओ, जोत्तरी।

तिनिए चारि बखे गहिसवारक काज हम केने हण्य भी दादी बड़ी जोर

बलचनमा

बेराम पड़ल। ओ रीम ओकर जान नई छोड़लकइ। पेटक बेमारी एक दीम, सौंखर दोसर दीम। पुरनकी गाड़ी जंका दादी-बेइक ईल-कील भंडकल जलदे, उपर सँ ई बेमारी तऽ ओकरा सब टा गत घीचि लेलकइ। बोना गाम मे ककरी किलु होइ तऽ मधुबनीक सरकारी अस्पताल सँ दवाइ लऽ आयए। बाबू भइबा ओइ जल लरी-खोखी होइ तहुँमे बागदरे अवइ। अदाइ गो इपइया रहइ ओकर पील, दू टका सवारी भाड़ा। अखबक दाम ऊपर हँ। बाप रओ। हमरा आउर से पध-भानि सेही नइ जुमए बेरपर, कतऽ सँ अथितए बागदरे आर कतऽ सँ दवाइ।

गाम मे एकटा बड़जी रहइथ, कतूरी मिशर। उई आबि कऽ देखलखीन। आर-इस पुड़िया दवाइ देलखीन। बदलामे एक खखड़ा भइहरी हमरा एऽ दाउन करलइथ। भादव रहइ की मे। रउदामे पित बंगदि सेल। दादी के रोटी-सोहारी नइ पचइ, भइगील भात एक चाटी खाइक। मुदा घरमे चाउरे नइ।

मकिला मालिक राखि के हमरा सँ जंतवइथ। पोनपर बड़ी देर सुआ लगवावइथ केर दोतर करोट केरइथ। कतेकालक बाद छुट्टी पाबी। कए बेर कहने रहइथ जे जहन जे चाहिअउ से लऽ गइहएँ। अही मरोम पर सेर भरि चाउर मरुलिऐन, एक दिन तऽ लुपुआ लेलइथ। पाछू पाओ-खेदेक देओ केलइथ।

माए दादीलए एकमुड़ी चाउरके गिन्हकी राइन्ह दइ।

एँठे महुँका भात अवलम रहइ, मुदा से हव दिना तइ। चउसासाक भालकीचमे पाहुना-परक नहिअ अवइ। भइवारि से पहुनाइ करए लए नइ मे बहराइथ लोक। पनिथाल बाध मे भरि छाती धानक बीच दने ककर मजाल हिकइ जे चरत ?

हमरा पलखतिथ ने हुअए, बेरपर दवाइ आनि विविअइ ततवो नइ।

बलचनमा

दादी के हमर बड़ भायेक, हमरी ओकरा खातिर जान जाए। चरबाहिअ पहिने भरि हत ओकरे बाँहि के मेइआ बनाक सुतइत रही। केशनो चीज दादी कतव सँ लायए तऽ तइमे सँ किछु हमरो अवस्से पदर लागए।

मुइल तइसँ दू दिन पहिने ओकरा मोन भेकइ माइक साना सके भाउ खेराक। जुभीक ओतऽ सँ बनसी आगल बुढ़िया पोखरिक बुझिनबरिया मोहाइ पर गुलरीक ओइमे जपह डिकिओलउं। चाली गौथि केँ ओरि देलिअइ—पायल बनसी गोसैआक नाम लऽ कऽ। नजर छल तरैहा दिइ।

मकिकानक क्यो अइ पोखरि मे ककरी भनसी खेलाइत देखइ तऽ गारि-मारि-फव्वलिक अन्त नहि रहइ तकर।

कनिएँ काल बाद तरैहा हिललइ तऽ आन-परान कुलम आबि कऽ ओखिक इतु डिम्हा मे मोस्तैद।

हमरो छीपल तऽ टेहराक दरसन भेल। ओरी गाछक ठारि-पात मे ओकरा भेलइ। सोझरा लेल तकरा। तहन बनसी सभेटल। गलकइ ओ मुइवाटे इधिक डौट पइसा केँ टेहरा केँ लटका लेल। घूमि कऽ आउन अएलउं। माए माछ पकवऽ लागलि की थीचहि मे खवतिनिआ घुमि भेल।

हाथ चमका कऽ बाजलि—बलह ने, खाइ तऽ हुक्के करबइक जे बुढ़िया पोखरिक मछरी केहन सीअदगर होइ छइ।

दादी ओछान पर पड़लि रहए। खवतिनिआके सरहरी सुनिठे बेरी ओकर ओखि खूबलइ। अन्हार मानिमे जेना खदयाक नजरि चमकइ छइ तहिना दादीक भसल ओखिमे डिम्हा चमकइ। कऽल जोड़ि कऽ ओ चुप रहऽ कहलकइ खवतिनिआ केँ। हम माए के बुका देलिअइ जे कोनो अन्देश नहि।

खवतिनिआ आगँ आगँ, हम पाछौं पाछौं। बड़का मालिकक पञ्चनरिया रोमहलाक अऽदू देने अवइत रही।

बलचनमा

थनासुरते पाछों घूरि कइ थो हमरा जुम्मा लऽ लेलक आर पैजिया
सागलि की बेलिअइन वृ थापइ । मारि कइ पड़ा बेलिअइन ।

कोइ दिन साँझखन गिरहथनी जनन्त बायूक हाथे हमरा मारि
खिअकथि । तहिआ सँ पहिने अइ पीनगर कइची नइ बजरल रहए ;

एकरा सेमरे माँझ दादी मुँह बावि देलक ।

हमरा आउर मे पहिने तेहरीक रेखाज नहि रहइ । महर मे अकरेय राज
करण, देहात में जमिदार । जनम सँ लऽ कइ सराध धरि डेग-डेग पर बामनक
सृति चलइ, बात-बात मे पतिआ लिखवक दइ । पनडिअ सभ छोड़की
जातिक लोकसँ अइमइक बंड असुलभीन तहिआ ।

चराधलि बड़का मालिकक पेठा जोरें पटना रहइ छल । वूनु गोटे
बतारी रही । कोलेज बन होइ छुट्टीमे, ओ अवधीहिन तऽ ईहो ध्यावए । कमीज
निकार पेन्हए, पकी बोली बाजए कइखन कइखन । चलबकिआक ई बगइ-
बाइन हमरा बेस बढ़िया बूझि पड़ए । सेहन्ता हुअए जे पटना देखितअइ
कनी ।

बाब उमिरो तबह बरखक भऽ गेल रहए । चरबाहि नहि सोहाए, मितिओ
भरि ।

माए आ रेवनी कहना अपन निमहए । खुदी-गूडा, नहुआ, कोबो, साग-
पात... कहना अपन खेपने जाए । धान कूटइन, चूड़ा कूटइन, चिकन पीस
दइन, घर-आंगन बहाड़ि-नीपि दइन, पेठिआसँ सकोदा-बारी आनि दइन ।
अईठ-कूड छठवइन, दरतन बासन मैअइन, पानि भरइन । कइखन कइखन
जाति पीचि दइन । अइ सब काज काल रेवनीओ केँ संग कइ लई ।

गिरहथनीक भातिज पटनामे पढ़इ छलखीन । होटल मे खाइत हुनकर पेट
खराब नऽ गेल रहइन । एगो आइमी के खगता रहइन हुनका । अइ लए
कोनो पकडोस, कोनो सवाक सोलकन्ह केर जहरति नहि । आर, ओहेन
आइमी बेसी बेसी दिन रहबो लऽ नहिए करितइन ।

हमर अइस्ये नाहि टा रहए, देहक साँचा नइ छोट रहए । मुनल अइ
जे बाप-पितामह हमर दुइ हाथक लहासबाला छल । माए पिड़सिआम लऽ
रहए मुश सुटि नइ छल ।

मलिकाइनिक भातिज दसमीक तारीलमे आएल रहथीन । पाँच-सात
दिना छलखीन । पक्ष पइच ओखि, ठाढ़ नाक, चाकर कपार—बेस खाप-
सुत रहथिन । सोभाबक मधुर, गप-सए काल कनेमने कनकाइ ।

पहर दिन बढइ लऽ हम घास छीलि कइ घूरी । तइखन ओ हमरा हवेलीक
भीतर बजा लइथ । नहेवा सँ पहिने मालिस ओ हमरे सँ करबइथ । बेह
बेस मुदगर रहइन । रोजाँ मेहो मुलकी छलइन । चिकनइ संग कइ हम
हुनक गत्तर गत्तर दूहि दिअइन । चानि पर कइक वेल नइ, कोनयन खाल
वेल लगवइथ । केसरमहन की भिरिंगराज, मने कीदन नाम रहइ लेलक ।
हमरा मालिस-मालिस लऽ करए आथए सादे बाइस, तइन चिकनक सानस

लोइया के जेना मोदिआइन भुकिअवइ छइ तहिना सुकिअवइ रहिअइन बड़ो कालधरि । कहइय जे बड़ बड़िया लगइअए रह्यो ।

एक दिन नालिस केलाक बाद पुछलइय जे पठना रह्यो हमरा संगे । सहरमे मोन लगलइ ।

मालिकबला फटलाहा गनजी रहए देठ मे, मारतो छेदे रहइ ओइ मे । भेटक सोझाँ एगो छेद मे अहुरीबुलिअउमे हम भारी जगुनता मे पड़ि गेली । की कहिअउन की मे कहिअउन, हम की जानइ मोलिअइ जे एहेन बात छ पुछि देता ।

तइयो कहलिअइन—मलिकाइन के पुछिअउ सरकार हमरा पुछि कइ की होत ।

अइपर ओ कहलइय जे तोहर माए जे राजी भइ जाइ तइ पीसी के अपन हम बुक्ता देवइन ।

इसलहक हवो भाइ, भेवी सौं केसइ । माए हमर चट बनी तइआर भइ गेलइन । गिरहथनी के सेहो मोन पड़लइन ।

मलिकाइन अपनाभलोजा के फूल बाबू कहथीहिन । सभ हुनका से कहइन । हमहु फूल बाबू—फूल बाबू कहइ लगलिअइन । सुविआ दौंस हनी तनी सी बड़ दोष लगइन । बकथीन तइ लगइ जे फुलडाली सँ सिंभरहारक फूल खसल जाइ छइ ।

फूल बाबू अपना पीसीक ओइजा साल मे दू-एक खेप अवस्से अवश्य । हमरा माइके हुनक सील-सुभाय गमल रहइक । श्री चंगेरा तइ कइ कहणक बेर हुनका ओइ ठाँ जाइन अवइन । नहिना सँ मार-खोर अवइन तइ गिर-हथमिओ चंगेरा-चंगेरा पठविते रहथीहिन ।

जसरा दिन लिलकन्ठ देखि के फूल बाबू अपना गाम गेला । एमहर

गिरहथनी के चरवाहक फिकिर भेलइन । ओना कहथीन तइ दहे जे मर, चरवा-होके कोनो घटी । एकटा जेतइ तइ एगारहटा आगत । मुदा कहवा मे की लगइ छइ । मनुख मनुखे थीक । हाथ-गोड़, नाक-कान ओखि-मुँह सय जानवर के रहइ छइ मुदा दिमागि मनुखे टा के होइ छइ । भैंसी चरावह की गाए, बकरी चरावह की भैंडी, अकिल तइ चाहवे करी बनीमनी । अहिना भइ जइतइ ई काज तइ बड़वेने बड़वक चरवाह होइतइ । खरबूज-खीराक खेटमे लोक छुटा गाछि दइ छइ । खपड़ी मे चून्कचेन्ड सँ ओखि-नाक-मुँह बना कए तकरा अउन्ड दइ छइ ओइ खुटोपर । दू मुठ्ठी मुक्कल घास लइ कइ हाथ-गोड़ बना दइ छइ । मुदा ओइ नकसी रखवार के कोइ पुछितो छइ । मनु-कलक बचा छेप-छेप नइ थिकइ जे जचहि मोन भेल तचहि सँ ठठा आनल ।

सै, मलिकाइन के मोस्किल भइ गेलइन । चरवाह भेटवे ने करहन । दिन दहेक बलपला छीतन, तहन जा कइ एगो बूढ़-बहीर दुसाध चरवाह भइ कइ एलइन । हमरा भैंसी छोड़इत बड़ अपघोच भेल । मुदा अपन साथ तइ किछु रहए नहि । तइयो बुढ़याकेँ सबटा बात बुक्ता सुक्ता देखिअइ । दू राति संग रहि कइ भैंसी सँ चिन्हारण करा देखिअइ ।

पखेव आर धुराहुरी एवने दिन होइ छइ । तकरा बिहाने हम फूल बाबूक ओइ जग जाइले थिदा भेलथे । गिरहथनी छीतन के संग कइ देखइय । माए दू दिन पहिमे सँ लोर बहवइ छलि । आंगन सँ बाहर भइ कइ गोड़ लगलिअइ तइ ओइहि पाड़ि के कानइ लागलि । हमरो कोइ फाटल तइ डोर कापइ लागल, ओखि नोरा गेल । मुँह सँ एकी आखर नीक नहि फूटल । मूडी गीतने अपन पेड़िया धेलथे ।

चाप तइ हमरा लेखे कहियो भेधे ने कएल । जा धरि जील ता कहियो कलकला, कहियो डाका, कहियो जलपाइगीड़ी तइ कहियो बेनाजपुर ।

कवार, नाक, मोड़ डार कान, ओकर एतवे हमरा भीन अछि । माथा चढ़नी
सो रहइ । दादी-ज्याँ दादिज छलि । ओकरे कोरा मे ई देह पोसल पावल
सेल । माए कहिया कहबो करइ जे रेथनी ओकर धिउर आर हम छिकिअइ
पुदिआकर ।

मधवन्ती तँ तमोड़िया गाड़ीपर मोलअइ । छीतन के देखल सुनल
रहइन । सुन्हारि मौक खन हमरा आकर फूल बाबू ओइजग पहुँचल गेली !

ई फूल बाबू गिरहथनी के अयन भाहित नइ भइलिन, बरमाहरे भाइक
लड़िका रहथिन । मलिकाइनक बापके तीन गो विआह । पहिल विआह
दीन कोनो बेटा बेटी नइ, दोसर विआह दिस फूल बाबूक बाप, तेसर दिस
गुनसन्ती देवी अवतार लेले छलथिन । ईहे हमरा आकर के गिरहथनी छलइय ।
जथा-जाल मभटा पूजे बाबूक बाप के भाग मे पड़लइ । मलिकाइन के बापक
घन मे सँ दसे धिगहा जमीनपर लगलइन । बाभन-छुनी आउर के ओइजग बेटा
अछइत बापक घन मे बेटोक कोनो दखल नइ । जे भेटतइ ते हथ छडाएमेदतइ ।
बेटी जा कुमारी रहलइ, ता खेलकड-पिलकड, मभ भिखारकेलकइ । अइ सँवाधि
किछु नइ

सइयो भाइ-बहीन मे कुमाय नइ रहइन । फूलबाबूक माए तँ ननदिक
लेल जान देखलिन, पइन भावजि नइ देखल ।

छीतन धूरि कऽ गाम चल गेल ।

तीन चारि दिनुका बाद छठि-परमेसरीक परगाद मुँह मे दऽ कऽ हमरो
आउर पटनाक जतरा कएल । रामक नाम रहइ लखनखली । लखनखलीव
तमोड़िया तीन कोन उत्तर, करे पुचाहुत बएलगाड़ी पर अबइत मोलअइ ।
बसु-जात हले बेनी नइ रहइन । एगो सूटकेस, बिस्तरबला होलडाल, छोटी
टीन मे धी.....ई सब तऽ रहबे करइन । चकरा अलावे पथिया मे चूडा,
ठकुआ, खचुर-टिनिआ भरल रहइन । केराक एला मे लपेटल अचारक

बजचनमा

पाठा सेहो खीह पथिया मे । एकटा डाली ऊपरसँ दऽ कऽ पथिया सावेक
लउइ सँ नीक जहाँ बान्हल रहइ । बन्हसो छनलो रहइ तदयो पथिया
मइमइ काइ ।

टिकट-टिकट मालिक अपनइ कटवलखीहिन । कनी कास थमिकऽ
भपटिआही दिससँ गाड़ी एसइ । मेला-जेला नइ रहइ तते । बइलमानो
रहबे करेन । लागि-निहिकऽ मोटा-चोटा कदा लइत गेलै ।

गाड़ी गुनलइ । तमुड़िया तहन कंसारपुर, तखनी मनीगाड़ी, तकरा
बाबू सकुरि । सकुरि मे मैल खेलकइ गाड़ी । दोसर जाइत रहइ पंडील दिस,
सारसराए सँ आएल छलइ । दूनु गाड़ीक ऐजन यानि से हो सकुरिए मे
दिसकइ । फूलबाबू उत्तरिक ककरा इनसँ ला गप करइ छलइय ।

ऐजन पुकी-देलकइ तऽ मालिक गाड़ी पर चढ़ि गेल ।

सकुरी आर दरिमह्दाक बीच मे एके गो टीतन पड़लइ सारसराए ।

दरिमह्दा लकसन के हवाही करइ छइ लोक । अइदाम बड़ी कास
गाड़ी छर रहलइ । एम तावेमे उत्तरि के लघी कऽ गेली । मालिक लाटफारम
पर टनलइत थुलैत रहलैय ।

पहिले पहिल हवाही टीतन हम देखलिअइ । एते लेन, एते रेलगाड़ी, एते
ऐजन पहिने कहाँ से हम देखबै । बाधा बाँहिक कारी कुर्ता पहिरने कुली
आउर । खासी रक कोट पेण्ट पहिरने टी-टी-ई । मोसाफिर सब सेहो
किसिम किसिम के कपड़ा पेन्हने ।

हवाही लकसन मे दू टा लाटफारम छइ । अइ पारसँ ओइ पार जाइलए
बइकी गो पुल से छइ ।

ठाढ़े ठाढ़े लोक केँ हवर-हवर सोहारी-तरकारी मिछैत देखलिअइ तऽ नइ
अजगुस लागल । मैल जे खोचोरी, बइठि के किए ने खाइए ! बोली से

बजचनमा

कण तरहक मुनिअइ ।

एक गोटे फदी छपलाहा कामज बेचेत रहइ । बाधू ओकरा सँ ऊ कागत किनलइथ । पाछी हुकलिअइ जे लोक ओकरा एखवार कहइ छइ । ओइ मे हुनिआ-जहान के खबरि छपल रहइ छइ ।

एजन पुकी देलकइ आर सुमुआए लगलइ त फूलबाधू गाड़ीपर चढ़ल । लगेमे आवि के बइसल । अइसी सँ गाड़ी खूब रैस कऽ देलकइ । नीचाँ पहिआ हडाक हडाक करइ । कील आ धूरी सब हीलइ त दिव्वा आउर हबेर हबेर बावइ । ऐजन कज्जक काली कज्जक काली करइ । मीथे मे एक गोटाके पुछलिअइ—गाड़ी एना किए बगइ छइ ?

ओ कहलक—पहिले पहिल गाड़ी चलए लागल त अउरें बहादुर के भारी मोस्कल भेलइ । काली माइ टकसइ ने देखीन । छोटा लाट सपना देखलक जे सए जांदा करिआ छामर कालीजीक चाहिएन । तहन क कलकथा मे टिलिगराम कए देलकइ । एकबेर सए जोड़ी करिआ छामरके सोनिव फिलखीन से काली माइक जीह चारि आबुर छोड भए गेलइन । तहिण सए ऐजन काली माइक जे-जे कार करइत चलइ इइ कज्जक काली कज्जक काली शब्दकाली.....सुनइ अइक ? हाके त कहइ छइ ।

ई बात सुनि कऽ गुन भऽ गेल रही । आव कोइ ई बात कहत त पतिए-बइ, मुदा ओहि दिन तऽ मोड़ह आना सँच भूमि पड़ल ।

गाड़ीमे देह लेना ने हीलऽ लागल जे ओ कहिअइ, हुणें जे गिरहथक कलमसे मचकी फूलइ छी । कनी काल आवे ओखि भपा गेल ।

अथा सँ निम्न टूटल तऽ गाड़ी समस्तीपुर आवि गेल रहइ । ई जकवन तऽ दरिमख्यो सँ पइस ।

अइ अइ हमराआउरके गाड़ी बदलेके रहए ।

हमर बिचार नइ रहए, मुदा फूलबाधू जिह देलइथ जे एगो कुली कइए ले ।

कुली बीका उठवलक । धी बला टीन हम लेली । पुल परसे ओइ पार भेलिअइ ।

लाटपारम पर माछे लोक । किसिम-किसिमके चेहरा-मोहरा । किसिम-किसिमके पहिरन-ओढ़न । बोली रानी मिफड़ाएल ।

मांटा चोटा-बाकत-बिस्तारा नीचाँ धेलक कुलीवा । गाड़ीमे बिलन रहइ । कुली अगन चल गेल । मालिक कहलइथ—चूडा ठडुआ बाहर कऽकऽ खाऽ ले ।

अही ठाम ?—हम कहलिअइन ।

मालिक कहलइथ—तऽ की हैतऽ ? देखइ नइ छी, कते गोटे तऽ खाइ छइ ।

ठडुआ दुइए टा लेलखीन मालिक, एगो भुसवा । छोटि कऽ अचार । हपारा सँ बूका देलइथ तऽ कल सँ पानि आनि देलिअइन । टोटी जोर सँ दबउने रहिअइ से छातोपर-कपारपर पानि पड़ल रहए, हबेर-हबेर पीछि नेने रहिअइ चइकी मुखल तऽ नहिण छले ।

गोख तातेक कुकुर आर तिन-चारि गो कलर छओड़ा फूलबाधूके घेरने डाढ़ । बड़ तामस उठल । हाथ उसाहलीअइ तऽ ऊहे मना कैलेथ । कुकुर आउर तऽ जे से मुदा कलरवा सब के अनधेज भेल जाइ, बीच बीच में ऊ आउर आवे—“बाप रथो बाप, सबटा खेने जाइ छथीन मालिक.....हमरा डाउर ले नइ रह देखइ, सरकार !.....” एखवा कहइ आर कनबाक भगल करइ ।

एहनाने कहउं खाए-पीबल जाइ ।

नई खाएल गेलैन तऽ मालिक पत्ता छुटि कऽ छटि गेलैय ।
 कलारवा सब अपनामे छुटुरे माही कटावज करऽ लागल ।
 हाथ भी कऽ एलैय तऽ कहलैय जे तो गाड़िए पर खइएँ ।
 कतीकाल पर कठिहारवाली ठरेन एखइ तऽ कुलिशौ दउगइत आएल ।
 रेडा वेत छलइ, मुदा हमरा आउरके जगइ भेट गेल ।

ई गद्दी जमीनगामन आएल रहइ, जाइ छलइ एलाहाबाद । पूरव भरई
 कुलकी कमतिया सब अवइत रहए, छपरा-बलिया दिन अपना अपना पर
 जाइत रहए । दू गोटे रहनो रहए जकर खोली नइ बुझिअइ । पुछलापर
 फूलबाबू कहलइय—ई बडाली थीक, बडाला भाखामे बजइ जाइअए । सते
 हथर-हथर वणै जे किछु नइ बुझिये ।

चूड़ा पंकली, ठकुआ खेकी । शनि घेने रही लौटागो, से पीवि गेली ।
 तहन जे बरठजे मे ओखि हुनलअइ से हाजीपुरके बाद निम्न शूटल । हाजीपुर
 आर सोनपुरक बीच बडकी टा पुल छइ । गण्डकीके अइ पुलपर गद्दी
 एखइ तऽ तती जोर सँ हड़हड़ाए लगलइ जे की कहिअ ।

फूलबाबू हमरा कहलइन—देखही, दक्खिन भर ओम्हर बारक पारमे
 दजोत जे देखइ छहिन सएह पटना थिकथ ।

ओरो तोरी ! हमरा मुंह सँ बहराएल ।

बाबू कहलइय—मुदा गाड़ी तऽ धूरि कऽ जेतइ । एखन चारि घण्टा
 लगतइ !

एतनी दूर जाइमे चारि घण्टा ?

तऽ, देखइत ने रहिन !

ताबड़ि मे सोनपुर आवि गेलइ । गाड़ी ठाढ़ भेलइ ।

फेनू कुली केलखीन मालिक ।

घटही साड़ी लगले रहइ । कुलीवा ओदपर गाऽ कऽ बइसा ऐलक । राति
 पहचमरि छल होतइ । गाड़ी चललइ तऽ ढकर ढकर बजइ ।

पहलेजा पहुँचइत पहुँचइत किरिन कुटि गेलइ । सामने थोड़ पार महेनर
 बाट ।

सबसे गाड़ी खलात भऽ गेलइ । जहाजदिस धरोहि लागल । बूकि
 बड़ जेना बीहरि सँ बहार भऽ कऽ लोक आगू मुई ससरल जाइए । बक्सा-
 विस्तरा साथपर दोकने कुली आउर पसिजरके थकिअबइत चलइ । हमरा तऽ
 अकबक किछु पुरखे ने करए ।

जहाज पर बरमलहुँ । फूलबाबू विस्तराबला मोटापर बइठलइय । लोहक
 बड़की गो नाओ, तइपर काठक कोठा । इहे तऽ भेल जहाज । जहाजक
 बीचो बीच चाकर-चउकोर खाधि मे जातें मसीन, मासँ कल-पुजा । लोहक
 तार आर जालीसँ घेरल रहइ । फूल बाबू कहलइय—जहाजक ऐन्जन
 बिकइ ।

ओ तऽ जा कऽ बैसि रहला मुदा हम बड़ी कालधरि जहाजक ऐन्जन
 देखैत रहलहुँ । एह, एन्न कही मनुक्खक मगजके ! सीचइत-तोचइत
 बिचारइत-बिचारइत कलमे कल भिरवइत गेल, पेच पर पेच कइत गेल—
 पथरकोइलाक ओंच पानि गरमाइ छइ, ताहीसँ भाफ तइआर होइ छइ ।
 भाफेक जोरे जहाज आर रेल आर कल-करखाना चलइए ।

जहाज पर बइसवाक बिच-कुरसी नहि रहइ । थक किलात मे माल जाल
 जकाँ जकरा जेना मोन होइ से सहिना कठए-बइठए । एखवारबला बुलि-
 बुलि एखवार बेचए । चिदिजा बडाम बला सेहो अपन सओदा बेचए ।

ऐन्जनमईक मोट-पातर टोटी आउर खून छुमुआइ । बहार मे जहाजक
 दूनु कात बड़का बड़का पंखदार पहिया घुमइत रहइ आर जहाज छर-छर

सर-सर पानि कटइल रंगा मइयाक छाती पर आगू चढ़ल जाइ ।

महेनर घाटक जेटीसँ दू हाथ फराके अहाज उरां भेलइ । कुली तब
अमाधम कऽ मोताफिरक गेलाभे पहुँचल । उतरे खातीर लोक सेहो कासे कासे
तइवार । जहाज एकभगाह भऽ गेलइ । हमरा डर भेल जे जलटि ने जाइ ।

फूल बाबू फेनू एगो कुली केलइथ ।

तीस-चालीस सीढ़ी टपि कऽ ऊपर महेनरघाटक टीतन रहइ । तबरा
समहर टमटम आ रिकसा ठाढ़ । तहिआ साइकिल रिकसा नइ, हाथ रिकसा
रहइ । आव ओ रिकसा छठि गेल छइ । ओइमे दुइए गो चक्का रहइ आर
आदमी दूनू हाथे दूनू डंटाक छोर भऽ कऽ ओकरा घीचइ ।

मालिक एगो रिकसावालाकेँ डीक केलइथ ।

मल्लुआटोलीक भीतर एगो छोटकिडमी गली रहइ, तहीमे छेरा रहइन ।
रिकसा बासाधरि आवि गेलइ ।

छेरा ई फूलबाबूक अयाकतन रहैत । कइकेँ रहोथ, कुहा वाता ई धरोचरि
रखइथ ।

मकान छलइ बनिआकेर । आधा मे अपने रहए ओ । आधा मगझोने
छल भाड़ा पर । बीच आकनमे इनार तइपर सँ छहरदेवाली । आधा इनार
ओम्हर बइइ, आधा समहर । दूनू दिशुका डोल नए दिन कुइनामे लड़ि जाइ ।

भाड़ा रहइ दस रुपइआ महीना । दू टा कोठली, भनखा, पएखाना ।
कनी टा अकमइ, दू चक्की जोकर ओतारा । पुरान केबाड़ीवाला दुआरि ।
ऊपर खपरा । कोठलीक फरस तऽ पक्की, मुदा आकन कचिआ ।

बर्तन-आसन सब टा रहबे करइन । महीना भरिके चाउर-दालि-मीन-
तेल मसाखा आवि गेलइ । दू मीन जारनि । एक दाकी चिपड़ी ।

मानस करऽ अबइत रहए हमरा । कनी मनी जे भाइछ छल से फूलबाबू
अपनहि सिखा देलइथ । पदरकोइलाक अँच पर रान्हल दालि-भात इनका
नहि सोहाइ छजइन । सोहारिओ नहिए खाधिन । पनपिआइ मे चारिटा
पिसकुट आर पिलास भरि गरम दूध । कहिओ कहिओ हलुआ से बनबावइथ ।

दोसरे दिन मालिक हमरा निधर आर हाफ कमीज सिखा देलइथ । केस
छँटना देलइथ नउआ सँ "कलकी साधुन के टुफड़ी लें साथ मलि-मलि
नहेलधइ । नइ ने मानलइथ । कहलइथ—ई पटना थिकइ, गाम नइ
यलचनमा

मिहड़। माथा के बगड़ड़ोंक बसओने रहवे तऽ लोक बगड़ड़ुक पुहतव !
सहरमे रहवाक छउ तऽ आदमी बनि कऽ रह !

मालिकक नगरि बचाकऽ एता मे ओइ दिन हम अपन मुँह देखल तऽ
हमरा रक्खेतोना मोन पड़ल—एह ओ हमरा उन सुनर कऽ सँ आबल ?...
कतौ गामक लोक बालबन कर ई सहर देखिरह !...

दू-चारि दिन भरि माथ बा बड़ीन बड़ मोन पड़ए, तकरा बाद परबेग
कम होमऽ लागल ।

नव देग, नव सुलुक । नव चौरा, नव बीली-वाली । नव देवघर, नव
रहल । लागए जे कोनो दोसरे लगनगर मेँ आवि गेल छी । मधुरी काकाक
मुँह सहरक कतेको गप सुनने रहिअइ मुए ई अन्दाज कहाँ रहए ? सहरक ई
लौचा तऽ सपनोमेँ हमर मोन नइ देखने रहए कहियो !

हुनने रहिअइ, सहरमे पहर रक्खिहि आदमीक मोन बदलि जाइ छइ ।
अपना घर-परिवार बिगारि जाइ छइ ओकरा । चुरा हमरा तऽ बीच बीच मे
अपन घर आबन बेश मोन पड़ए । माथ मोन पड़ए, मोन पड़ए रेबनी । चित्त-
कवरी शकरी मोन पड़ए । बाड़ी मठक ठुठ विम्वइ, ओकरा कान्हार लतरल
देरा, एकचारी पर लहरल मोरक लची, लौकिया गिरचाइ धर बुढ़वा गाछ
कोखन कोखन आबन मे हुलकी देनिहारि दिवनी...एकएक कऽ सब मोन
पड़ए । बार जोर-जोर सँ हम सौँत धीचे लागी । खन बुढ़िया पोखरिपर
सुरता लाग खन डोंड़के चउरी पर—अइ चउरी मे हमरा आउर कैसउर
जपाही सँ...अपना गामक बाध बोन मोन पड़ए ; कलमे नइ बुढ़वा किछुन-
भोग पर नकट नाइइ । लवकि मकहि कऽ डोलवाकी सेताइ से गाछ मोन
पड़ए । रोमहा, सुनिजा, सुट्टा, नरेता, कुंजा, घुट्टा, मकराहा सम बतारी
इत्पादि अबए...

बलचनमा

कइ सब सँ मोन भरिआए तऽ लहरटोली बला सबकक कातमे कनी काल
ठरा होइ । अथइत जाइत शोक केँ देखिअइ । बाइतिकल, मोटर आर
ठमठम आर तुन तुन बजइत इश-रिक्सा । ई सब देखिअइ तऽ गामक सुरता
नइ रहए ।

काज बेसी नहि रहइ छल । धर्तन रातिए कऽ मॉजि राखी । चौका सेहो
रक्के कएल रहए । भौरे ऊठि कऽ चुलहीमे आगि धरा दिअइ । दूध दऽ
जाइ से अऊँटि छी । तहन अइहन चढ़ा दिअइ । एक कात भातक आर एक
कात दालिक । भग सनी तरकारी लऽ आवी बजार सँ । न बजइत बजइत
भानल तइआर । लाहे न भरि मालिक खा लइथ । दालि-भात-तरकारी
चटनी, धी पापड़-अचार । दही दिन कऽ, राति कऽ दूध । इस बजे धरि ओ
कलजेन चलि जाइथ । हमहु नहाइ-सोनाइ, खाइ-पीवी, लउका बरतन करी ।
नीक जकाँ दोबारा काझि बहाझि दिअइ कोठरी आउरके । बारह बजइत
बजइत पुरमति भऽ जाए ।

बारह सँ के के तीन बजे धरि बेग टहलान मारी । कहियो कहियो
गोलघर दिस, कहियो सिकटिरिएट, कहियो जाबूपर, कहियो टीसन,
कहियो अलपताल दिस । कलजेन दिस कहियो नहि जाइ । मालिकक
लाज हुए । ममा तऽ नइ केने छलइथ, तइओ टहलइत-बुलइत काल ओ कहल
देखि लइथ सँ लाजे कटुआ जाइ ।

लहिया नइ बहराइ तहिआ मकानक मलिकाइन-जौरे गप्प लड़ावी ।
ओकर घरबला भौरे केँ दोकान जाइ से निसोहँइ राति कऽ अबइ । ई
मडगी हमरा मासिको सँ हेली ठूठा करइन आर हमरो सँ करए । मालिको
के पान खिलावइन बार हमरो खुआवए । दू टा बच्चा भऽ कऽ मरि गेल
रहइ, बाद मे किछु भेवे ने केलइ । घर-आबनक ओगरनाहि लए बुढ़िया

बलचनमा

मउसी कें रखने रहए । ओकरा मोने तहरिकास हम ओकरा खिफाई महजुत रहितथइ । मकानवाली के ओ बेगारी नहि छलइ जे केनारी खबसनिजा के रहइ । गणकहि घडर ई अवस्ते रहए । गण केनिहार केओ नहि भेटइ त हमरे सँ संसोज करए ।

मालिक दू गो पइसा हमरा रोज दइथ । ई पइसा हम जमा केने जाइ । कथि मे खर्च करितउ ? तर-तरकारी आर दांसर चीज-बचस आनऽ काल एसी-आध-गो पाइ बचिए जाइ, बीड़ीक खर्चा ओही मे चलि जाए ।

पान खाइत बड़की एना मे कइएक बेर अपन मुँह देखी । सबकक कतबहि मे लत्तहि पानक दोकान लत्तहि एना लइ । जहाँ एना देखाइ पड़ए की इन ठमकि रही । कोनो ने कोनो लाये गीइ अपन अरें देखिली एना मे ।

चारि बजइ की केनू चुल्हाक आरती करऽ बेगी ।

मालिक कहिओ कहिओ हलुआ अपनहुँ बनावइथ । एक दिन बनविते काल अण्डा फोड़िक पीयरका रस ओइमे चारि देलखीन से हमरा बच कोनाइन लागल । मालिक कहलइथ—गाम पर नाँह अजिइइम ।

शे किये ?

फूलवाधू कहलइथ जे सुगीक अण्डा अपना ओमहर बाभन नइ खाइये मुदा काएदा बड़ करइ छइ । अहरेजी पढ़निहार इसकूतक छहरदेवाली छरपि क कालेजक अठनर मे पाएर रहितहि अइ तयकथुक चर्चा बर्चा सुनइ लगइ छइ । तकरा बाद केओ-केओ हमरे अको दोमावागी चढ़वऽ लगइदिदेखितहि छै.....

सुभाव बेजए नइ बूमि पड़ए । ओना हम हुनकर टहलुआ रहिअइन; मुदा एतगइआक अनमना सेनो छलिअइन । हिन्दी अहरेजी अजइत मुँह दुखाए लगैत तऽ हमरासँ अपना भाखा मे बाँजइथ । कहइथ—अही लेल

तऽ तोरा अनलिअए, टहल-टिकीरा लेल तऽ अहुडाम आदमी भेटिअ जइतए । तोरा यज्ञे नप करइत रहइ छी तऽ चुकी पड़इए जे गामहि छी.....

बाप किरांपन रहथीन । माय साहलचर्च । बापक दिस सँ खर्चा भिवाये तँ भेटइन मुदा माए तुकाकऽ खूब देखीन । तुइए चारि दिन हम हुनकर गाम पर छल बेवइन, धेती तऽ थाह-पता नइ लागल, मुदा एतवा बुझ मे आवि गेल जे लगानी-भिड़ानीक बड़ ओर छइन । जर-जवार मे दुसाध, हुमइर, चमार, खटवे, धुनिया, कुशरा आउरके छोड़-छोड़ टोल रहइ । उन-बनिहार आदमी कारिह पेट बेचने घुरइए, ठाहू दिन पेट बेचने घुरए । भूखक लेल कतरी अँइतऽ लागइ तऽ बाहू भइआ सँ चारि पसेरी अन्न आ की दूगो रुपइआ सडैत गऽ । काय तऽ चला देखीन, मुदा पाछाँ आस्ते-आस्ते लोहू धींच लेथीन आर चमड़ी चिवाकऽ तिछी बना देखीन । चुसनु बाहू—अइसन नाम तइसन काम ! फूलवाधूक बाबा कनइली राजक तसिलदार थथीन । भागलपुर सँ दच्छिन, बाँकादिस चाकरी करइत जिनगी मुवस्त भेल रहइन । कमाकऽ ढाल लगा देने रहथीन । हुननु बाहू दर-दरसूक बलें बधीन जाल खूब बढ़ा नेने रहइथ । धनीक खाई हिन्दू रहओ, खाई मौजा, खाई अकरेअ रहओ, खाई जपानी—सब एक्के जातिक होइए । गरिवहीके हमरा जनइत एक्के गो जाति होइ छइ । चुसनु बाहूक भितरिवा मारिसँ राइँ ठा नहि, बाभनो कईएक घर तवाह भऽ गेक रहए । घेठा के पढ़बइ छलइथ जे जज अजिइटर देखीन ।

मुदा अपने इच्छे तऽ सब किछु होइ नहि छलइ । बापक जे मोन रहइन ठाही मोताधिक फूलवाधू तइआर होइतथीन तखन की छलइन ?

फूलवाधू भितरे भितरे कछरेसिआ भेल जाइथ छलइथ खूब एखवार पड़इथ । लोडर आउर के लेकचर खून सुनइथ । बरका बरका लीडर

मालिकदार हुए और माका पेनिह पेनिह के बहल बार । मानन सहायकार
रहे हुकुम चलाने । बाकी पुरखला बड़की मैदानमें कहिया कहिया मारी
मिटिन होइ । पूरवायू बरोबर मिटिनमें जाधि । एक थाप धेर हमरू देख
नेल होएब । बात बिछ नइ बुझिअइ, ओते रात लोक के अमा देखिक
अवगत लागए ।

कोट कमेच छोड़िबस मालिक लखख कुत्ता पेटस लखलखीन । धोती,
तकनी, डडलेछा, चलेच, मोड़ुआक कोल..... सब खडख । बोनत नहीम ले
जेरापर भेट करे अवधान ताहुमे आव तेहने लोकके बेनी देखिअइ ।

खेवा-पौधक देहो टह बालि गेलइन । माध-माधु और खण्ड छोड़ि
देखैय । हमरा मालिकक ई अचतार देख के दुख हुए । किछु कहयन के
हिम्मत नहि । अहि लोक मे फगुआ बितलइथ ।

कइतक पड़्या और बलअरनी । मालिक बेर डोर फाड़ि गेलइन । ई
देखि के हमरा कोढ़ फारए । हुनका तऽ थापक चिह्नी बरोबरि अवहन,
मुदा हमरा नहि आवब माइकेर हालतमचार । गामका लोक ओना तऽ ने
हुइओ पतिआनी लिखत, अहन कोनो राजा-देव हेतइ तइखने मोन पावत ।

चारि मासक दरमहा पठा देने छलिअइ, आठ गो बगइला । कालीस
दिनके बाद तक रलीत गेल । ओटा-निवान हमर माइएके रहइ बूझ ओइपर,
गवाही मे के बसखत केने रहइ से नइ बुझलिये ।

चेतमे दू राति मालिक बासा पर नइ एलइथ ।

पुछला पर बगला—धीघासे सवाकत आसरम छइ कीर्तिहि रहि गेलिअइ ।
हीतमीत लोकनि नहि मानलइन ।

बड़का कबलेन सब मे पड़ाउ कम होइ छइ, जुडी बेनी । बरख भरिमे
पांचो मास फूलख रहइ छइ की नहि, से कहनाइ सोसकिल । फूलवायू

बगन दून काज सभारइथ—पदबो करइथ और कइसे करइथ ।

गरनीक जुडी देवाल रहइ । चारिए छ दिन बाकी छल हेतइ । मालिक
भोरे सदाकत बासरम शैशइथ कहले रहइथ—सौभुक पहर सुरबड, एखन
हमरासेल भानस जुनि करिअए ।

खिचछि और आवुक लाना बनइलअ अपना जाए । खेतअ और टहलि
बलि बड बेर बितलअए ।

सौभान गकासे खुलहा बरा देखिअइ । बड़ मोरस सुनिगा आवुक
सरकारी कैली, टमाटरके मिठका चटनी बनौली । हीसं बालि खौकली ।
लीन पतिआन खियाकऽ दूध अंठली, अचार नइ रहइ, व मकानवाली सं
मिमकी बनकी ।

आहि रे वा ! बारह ठोकलकइ मुदा फूल बावू कहाँ एलइथ । धुरि धुरि
बड हम कइतक कास मे आवि ठरा होइ । पच्छिमर ले कोनो रिक्ता अवइ
ठकरा गहिनी नगरिअ देखी, बड अनदेसा हुऐ । हुऐ ले की भेलइन मालिक के !
बाट तकइत तकइत डिभइ टहकऽ लागल तऽ कोठरी मे आवि बड पड़ि
रहलहुँ । के खाइए के पिअइए !

कखन कोना पदनी मुना गेल आ नाक बाज लागल से नइ बुझलिअइ !

भोर मे महेन बावू आवि कहलइथ—“मालिक त मोहर गिलफहार भड
शेलधुन, माला पहिरि कऽ बहल गेल छथुन । एखन कपीलए बासा ओगरवें
चल, ता बर हमरा ओतऽ रह गऽ । चीज-बउत अपनकोठरी मे बन्द रहतइन ।”

महेनबावू एते बात इक्के बेर बाजि गेलइथ और कुरमी पर बडठिकऽ
तिकरेट पिअ लागलइथ ।

हमरा ई सब सुनिअ अवतक किछो नइ फुराइ ।

तोड़-सत्रह बरखक अवस्था छल होत । महेन बावू के हमर हाजति देखि

कऽ कनोट भेल हेतुन । मालिकक मिलफदारी दऽ ओ जऽ नहि कहितइय आवि कऽ तऽ कोना बुझिअइ ? एखनार सेखनार बन्दे भऽ भेल रहइ आर हमरा तऽ पढ़व नइ आवइ, कारो अच्छर नहि रहइ हमरा लेखे । तहन अतऽ बात नइ बुझने रहितअइ तऽ कु-चरि दिन अबस्से अहनहतउ ।

बड़ीकाल-रि सुम्न रहलई । तहन कहलअइन—सरकार, बरिमंगा-मधवनी दिन केओ मेनिहार हीइ आर अहाँ चिन्हार रहए तऽ ओकरे सक हमरा बेल पठा दिस ...अइ ठगल असगर हम कोना रहब ।

अइपर ओ हथलइय आर बाजला—धुर बतहा ! तोरा लेखे जेहने फूलवाबू तेहने महेनबाबू । हमरो आकर घरेमे रहइ छिअइ, चीन मे वही रहइ छिअइ । माल दू माल मे मालिक कहल सँ वहरने कमधुन, तो अमेरे अगुवाई छऽ ।

महेन बाबूक ई बिचार चिरेता नाहित तीठ बुकना भेल । इन सोचली के बाबू लोकनि वड़ा मतलबी होइ छथि । दिनक नोकर-चाकर भागि भेल हेलेन तँ हमरा पर एतेक जोर दए रहल छथि, नहि तऽ मंगली से ककरा के अन्न-पानि दैत छैक । तइयो दिनक ओहिठाम दग दिन रहि देखबाक चाही । एना एमगर गाँव जावब तऽ मलिकाइन छोदि छोदि कए सबटा हाल जानि लेतीह । ई सभ बात जखन फूल बाबूक माए-बाप बुझथिन तऽ हुनका लोकनिक मोन हरबड़ा जेतनि । मालिकक माए तऽ अन्न-पानि छोदि कए जान देवापर उतार भए जयथिनह । ई सब बहबध हमरे भाष पर पड़ल बाप रे । ई तऽ भऽ नहि सकैत अछि ।

मोने मोने हम निश्चय कयलहुँ जावत फूलबाबू जेल सँ छूटि कए नहि ओताइ, ताबत तक हम राम नहि आएव । महेन बाबू ओके कहैत छथि, जेहने महेन बाबू, तेहने फूल बाबू । बाजब भूकब, रहमाई सहमाई रंग-ढंग सब उहे

छैन्ह । कहनार कठिन छल जे दूनू से के घनेस हेताइ आ के बीस । तऽ बुक-लइ हो भाई ! जल्दी-जल्दी बसु-जात-ठीक केहुँ आ अंगला-खिड़की बंदिया जहाँ बन्द कऽ देखियैक । अपन कपड़ा-बिड़ोना, सिसेट-पिनसिल निकालि कऽ बाहर राखल । मकान मे ताला ठीक महेन बाबूक संग चलि अएलहुँ ।

महेन बाबू वड़ा खुशी भेलाह । घरक बिषय मे बहुत बात ओ बाटे मे हमरा सँ पूछि लेने छलाह । बाप मरि गेल । दाइ (आजी) मरि गेल । माए आ छोड़ बहिन अछि । दू-तीन बरख तक महीसक चरोनी कैलहुँ । ई सब बात महेन बाबू हमरा सँ बूझि लेने छलाह ।

शहरक बाहर बौकीपुर मैदानक लग एक बड़काटा बंगली लाल रंग मे रंगल छलैक । ओ भीमे हमरा भीतर लऽ भेलाह । हमर मलिकाइनक घमिर धँ कनी नगर महेन बाबूक माए पीढ़ी पर बैसल तिल मे सँ कंकड़ी बिछैत रहथीन । महेनबाबू हमर काम्ह पकरि माए, के कलखिन—माए, ई फूल-बाबूक नोकर छैन्ह । माँजी हमरा एही सँ शिखा धरि देखि बजलीह—फूल बाबूके ई कि सनक असवार भऽ भेलैन ? गाँधीजी नीक बरक मेना सबके बिगारवाक ठीका लए लेलैनह अछि कि ? पढ़व-लिखव छोड़ि कालेजक विद्यार्थी सब आब दूने बनौते कि ?

एते वाजि ओ सूर्य भगवानक दिस हाथ चढा कए बजलीह—हे दीना-बाब ! आहाँ एहि मेना लोकनि के बुद्धि दियोन ।

नगर मकान रहैक । बड़का-बड़का बारहेक कोठली छलैक । आँगन मे लताम, हरतिगार आ नेथीक भाद छलैक । हम ओही झाड़ समक दिस पढ़-बकर सकैत छलहुँ कि माँजी मलिका के सीरपारि कए कहलखिन—बाबाजी, फूलबाबूक नोकर आएल छैन्ह एतरो मानम देखैक ।

हमरा महेन बाबू लऽकऽ अपना कोठली मे अएला । अपन कोट उतारि

छुटी पर टॉपि रेलखिन। कुत्तीर बैसलाह आ इशारा सँ हमरी बैसए कह-
लनि। हम नीचा पलस्तर पर बैस गेलहुँ। फ्रीडली बड़िया आ नमहर छलक
साफ मुखरा। एक पक्षी, कुत्ती, देबुल, कितान सँ भरल रैक आ कपड़ा टॉपि
बला छुटी। पक्षी पर चनवा जकों ऊपर टॉगल मुखदरी, पैर पोछक पापीश।
ईसन बड़ बड़िया लागल।

महेन बाबू बंगाली छलाह। हमरे मालिकक संग पढ़ैत रहथि। हुनगोटा
मे बड़गाढ़ दोरली छलैन। मालिक के घर सँ चूड़ा, घी, अचार, सब खाएल
रहथिन ताहि मे सँ आधा महेन बाबूक घर पठा देने रहथिन। महेन बाबूक
माए-बाप सब हमरा मालिक के चींगैत छलथिन। ओ लोकनि फूलवाधू केँ
अपने मेला जकों बुझैत छलथिन।

बंगाली लोकनिक पतिवार बड़ भरलपूरल रहैत छैक। हुनका लोकनिक
घर-गृहस्थी, खेनाई-पिनाई, ओढ़ण-पक्षिब, सब बेशवाली (बंगाल सँ दक्षिण)
लोकनि सँ भिन्न। महेन बाबू आठ भाई-बहिन छलाह। एकर अतिरिक्त
घर मे माए-बाप, विधवा मौली, दू भोकर आ एक मनमिया, जकरा सब बाबाजी
कहि कऽ होर पारैत छलैक। एक बड़का इस्टेट छलैक हो भाई। महेन
बाबूक पिता सिकंदरियट मे अफसर रहथिन। आठ हो रुपैया महीना प्यैस
छलथिन। बारह सालक पुरान नोकरी छलैन। बंगलाक पाछू मे करीब दू
बीघा खाली जमीन भेटल छलैन। आधा हरिभर घासक फाटल-छाँटल छोट-
छिन मैदान-भीमक दू टा भूमेत समैत छुआन गेल। काटक छोट टा फाटक।
साहेबक नाँव पट्टी पर लिखल रहैन। हत्ता में दुकन सँ रहिने ओह पट्टी पा
तोहर ओखि पड़ि जैतह।

हुनका ओहिठाम चारि दिन रहिकए हमरा मोन के बड़ अंतोष भेल।
महेन बाबू हमरा अपन चाकर बना कए रखने छलाह। बेसी शिरोष रवि

बलचनमा

केलक। भोकर के ओ मना कऽ देने छलथिन—बाइस हमरा कोठली मे बल-
चनमा छाड़ू देल। हमर चाय आइस बलचनमे अइ टेबुल पर आनिकऽ
राखल। हमरा घोली केँ बलचनमे चुनिआयत। कहबाक तारपस ई थिक जे
तिमेह मे महेन बाबू हमरा सराबोर कऽ देलनि। मुदा हो भाई सब, एतेक
अहरी भला हम अपन फूलवाधू केँ कोना विहरि जैतहुँ।

फूल बाबू बड़ा मोन पड़ैत छलाह। एतगर मे कतेक बेर करेल फाटल,
कतेक बेर ओखि भरि आएल—से कहि नहि सकैत छीअ। ताइ दिन गांधीजीक
बड़ जोर छलैन। बड़-पकड़ जारी छलैक। सरकार बड़ादुर दिस सँ कानून
छलैक जे नून खन नहि बना सकैत अछि। गांधी महत्ता सरकार केँ मुक्तिय
पारैत रहथीन। अंगरेजी सरकार अपना जिव पर बड़ल छलैक। कलकत्ता
वर्म्बैक सेठ साहूकार लोकनि सेहो भीतरे-भीतर गांधीजीक पक्ष लैत रहथिन।
हुनका लोकनि केँ साफ-साफ देखऽ मे अपैल छलैन जे तोराज मेला पर सबसँ
अधिक तपा हुनके लोकनि केँ बेचैनि। सरकारक मुक्तता सँ तोराज आ तोराज
मेला सँ बेसी सँ बेसी कल-करखाना फोड़पाक व्यवसर, सब हुनका
लोकनि केँ स्पष्ट देखाइत छलैन। अखन जे देस के दूहि कऽ अङ्गरेज लऽ
जाइत अछि से तोराज मेला पर सब हमरे खजाना मे आवऽ लागल...सन
हीन-वत्तीक जमाना रहैक। गांधीजीक हुकम सँ बाबू लोकनि गिरफ्तार
भए रहल छलाह। हमरा फूल बाबू के सेहो गांधी महत्ताक कथा लागल
रहैन। मुदा हमरा बूझऽ मे नहि अथैत छल जे कियाक लोक पैकार शपना
के पक्षधर अछि। ने गारि-पीट, ने गारि-तारि आने झगड़ा-झंझट। फेर
किया पुलिस ककरो पकड़ि कऽ लऽ जाइत छैक। सरकार पागल मे तऽ
भऽ गेलैथ। हम एक दिन महेन बाबू सँ दुखवो कैलियनि आ उत्तर मे ओ
बहुत बात कहलनि मुदा हो भाई हमरा बूझऽ मे किछु नहि आएल। बेर-बेर
बलचनमा

हम इयाद सांचेत छी जे बाबू के जखन जइसे जयबाक छलैन तखन हमरो नेने अइतथि । ई जे दस-दस, पाँच-पाँच आदमी कुर्ता, धोती, टोपी पहिर कऽ गरा भै माला पहिरने चढ़ऽ आ खड़ी जकाँ गून बनावऽ जाइत रहथि तऽ हमरा ई बाबू लोकनिक एकटा खेले बुझना आए । अहुना कहियो ककरो लोराज भेटलेवा ।

अधिक काल तक गुन-गुन रहबाक बखतर हमरा भैने बाबूक ओठ कहियो नहि भेटल । हमरा ठगिरक भैया सँ हुनकर घर भरल रहैन अपना भाए-बहिन मे नमहर भैने बाबू छला, भाए-तेसर आ चारिम-बहिन ठगिर मे हमरें एतेक टा रहैन, चारिटा छोट-छोट । ओ कहियो हमरा बधाव नहि रहए देखनि । बड़ा बाबू आ अम्माजी सेहो हमरा पर नजरि रखैत रहथि । पन्द्रह पन्द्रह दिन पर हजाम अये आ बच्चा समके केश काटि जाइ । शनि दिन कऽ थोल कपड़ाक मोटरी लऽ कऽ धोबी अयेक । सोबन मे दू एक टुकड़ी माछ नित दिन अवश्य भेटि जाए । हुन नहि चाहैत रही कि चाय पीबाक लठि पड़ए मुदा भैने बाबू हमरा जबरदस्ती पिअवैत छलाह ।

आर हमर काजे की रहए ? भैने बाबूक थोड़ बहुत सेवा टहल आ छोट कऽ छोटका छोटा बाबू के रखरक पहिया बला छोटका गाड़ी मे हुन लेनाई । बड़ा मोठ छल । भरि पेट खेनाई आ तानि कऽ सुतनाई । हमर ओ छोटकी मलिकाइन आ एहि अम्माजीक बीच आवास-पतालक अन्तर । एतए हमरा केओ कहियो गारि नहि देखल । केओ कुसा सुअर नहि कहलक । केओ कान नहि अइठलक । उनटे एतए भैने बाबूक छोटकी बहिन सब तगर आ कनेरक भुमका सँ हमरा कानक साज सिगार करए । एक बार कहिल, कहवक तऽ नइ ककरो ? नइ कहवक तऽ कहव । अच्छा के सुनह । हमरा सँ साज-झड़ मातक छोट छल । अनीता नाँव छले ओकर ।

भैने बाबूक छोटकी बहिन एक बहिन आ दू भाई ओकरा सँ नमहर रहै । पिण्डश्याम गोल चेहरा, बड़का-बड़का आँखि, चाकर कपार, पातर-पातर ठोरवाली छोट-छिन मालमि झल ओ । नाचगान सिखावक हेतु हुनका ओहि-ठाम मास्टर अइत छलखिन । पढ़ावक हेतु तऽ फराके मास्टर रहबे करैक ।

बंगाली लोकनि बड़ा भोजी हाइत छथि । खाली खैर-पीर, पदम-लीख आ रुपैए पैसा नहि, नाच-गान आ राग-रंग सेहो चाही हुनका लोकनि केँ । ओके ने छइ हो भाई केओ अगर ठेकान सँ जिनगी बिताबे तऽ कि हजै ? तऽ हो भाई, ओ अनीता खूब पढ़िया नचै । गला सेहो ओकर बड़ मोठ रहै आ हमरा तऽ खुबे माने । किछु दिन तक तऽ हमर ओकरा सँ दूर भगैत रहलहुँ । मुदा देखल जे नेचारी चोराकऽ हमरा खेल दिक्कट आ चौकलेट लवैत अछि । एक छोट-छिन ककथा आ एक ऐना कतौ सँ आनि कए ओ हमरा देखक आ चलहन बऽ कऽ कहलक दादाक (भैने बाबू) संगे रहैत छै । अहि ठाम एतेकटा ऐना राखल छैक । कहियो-कहियो ओहि मे अपन चेहरा तऽ देखि लेल कर ।

किया, कि अछि हमरा चेहरा मे ? हम जे ई पुछलिये तऽ अनीता हमरा दहिना गाल मे एक धप्पड़ मारि कहलक—रहतौ की ? तोहर केश बहुत बढ़ियाँ छीक । सोन सन केश सब के नहि होइत छैक । एहि केश मे ककना धहर फिरबाक चाही । कनीकाल बाद फेर बाजल—हम राधा बनव आ तँ कृष्ण बनिकऽ हमरा संगे नचबे ?

लोक देखत तऽ की कहत ?—हम ओकरा दिस देखि कए कहलियेक ।

हमरा कान मे ओ कुतकुता कऽ कहलक—हुपर मे कहीं केओ रहैत छैक ! आ नाचऽ बेर मे मुँह नहि पहिरब । ने मुचुर मुचुरक आवाज हेतै आ ने केओ बुझतै—। एकरा बाद अपन दून् हाथ हमरा कन्हा पर रोलि मधुर

हठिष्ट अनीता हमरा सँ है करा खेलक आ ओहि दिन तऽ नर सुवाँ ओकरा सीत दिन बाद लखसर भेटल आ हमरा लोकनि खूब मजकूर। माऊस बजावऽ तऽ हमरा अवैत नहि धरि, तखन अनीताक हर छलैक से हो भाई हम ओकर बात राखि देखिबैक।

फूल बाबू फाटुन में छुटि अएला। महेन बाबू फूलबाड़ीशरीफक कैम्प जेल में जाकऽ हुनका तँ भेंट कऽ आएल रहथिन। हमरो कुशल-क्षेम कहि आएल रहथिन। छुटिसे ओ भोगे महेन बाबूक घर पर पहुँचलाह।

अपना मालिक के देखिबै हमर मोन भीज गेल। ओ डाँढ़ी उठाक हमरा ओँख में देखए लगलाह आ पुछलनि—केना रहै छले है बलचनमा? हमर ओँख भरि आएल। कहि नहि सकैत छी जे हमरा खुशीक मोर छल अधवा पहिलुरा विषोयक।

फेर ओ इमामा लोक हम नहि गेलाह। महेन बाबू अपन मालिक संगेर गेल रहथि। ओही दिन साँझ कऽ मालिक अपना बेरा में चलि अएलाह। हम देखल जे मालिक बहुत बलि गेल छथि। साँझ-प्रातः मालिक भजन गवैत छलाह। जेजे सँ गोताक एक छोटा पोथी लग आएल छलाह। किछु दिन बाद बक्का में रहए वला एक चरखा खरीद लएलाह। खैन-पिन सेही हुनकर बलि गेल छलैन। मगला मिरचाई किछु ने। सरकारी उसीद कऽ खाइत छलाह। एक दिन देखल जे कठोरी में गहूम भीजऽ देलखिन। हम तऽ इन्तिन नहि सकलियै जे एकर कि हेतैक। दोसर दिन छानि कऽ गहूम के भीजल अंगपोछापर पवारि देलखिन। प्रातःकाल गहूमक थाना लखन अँकुरा गेलैक तऽ फूलबाबू एक-एकटा कऽ खएलनि। कहियो उममल आलू, पिलाज आ गुड़े पर रहि जाइत छलाह। हमरा तऽ हो भाई अन्देशा भऽ गेल जे बाबूक मिनाजे सनकि गेलैन अछि।

बलचनमा

बाँलेन सँ नौच-कटि गेल रौन। गाँव-घर जएबाक तऽ नहि मुदा शर्मंगा जाए काँपेसक खाल करवाक विचार करए लगलाह। महेन बाबू बीच-बीच में आवधि आ दूगू में देर-देर तक गप्प होइत। हम छल्ल जकाँ हुनका लोकमिक बात सुनी। अपन मालिक आ महेन बाबूक कृपा सँ अक्षर में मात्रा लगेनाइ आव हम सीख गेल रही। ऊऽ टऽ ऊऽ बच्चाक पहिल पोथी हम पहुँचाए लागल रही।

फूल बाबूक मोन पढ़ाई सँ छलरि गेल रहैन। माए बापक डर आव हुनका नहि छलैन। ओ महेन बाबू सँ एक दिन साफ-साफ कहलखिन—हो भाई, हमरा सँ ई सब नहि हेतह। घरक लोक सब हमरा बकील बनावए चाहैत छथि। बकालत में बात-बात में झूठ बाजए पड़ैत छैक। आव कोनो दोसर-तेसर नौकरी सेहो हमरा सँ नहि हेतै। एतेक जमीन अँछ जे हमर माए आप भूख नहि मरताह। अम्ह अपना देशक सेवा करए दऽ। तो बलिस्टर बनबऽ, बिलायत जेबह। तोड़र रस्ता दोसर छह आ हमर दोसर।

बहिला दू मास में हमरा माए के नाँव पाँच-पाँच रुपैयाक मनिआहर पठौने छलखिन। जेल सँ अएलाह तऽ पाँच रुपैया फेर पठा देलखिन।

एकदिन गोरे उठि हमरा सँ ओ कहए लगलाह—बलचनमा, महेन ओहि-ठाम नौकरी करबै? हम तऽ पढ़ाई आव छोड़ि देल। शर्मंगा समस्तीपुर, हनुमनी, मुशफ्फरपुर, पटना जतए काँपेस पठावैत ओतइ रहि कऽ काज करब। आव हमरा नौकर नइ चाही। गाँधीक हुकुम छनि जे अपने नदी सेहो अपने हाक करए। अपन कपड़ा अपने साफ करए। अपन भोजन अपने बनावे।

हम पहिने सँ बुझैत रही। कनीकालक बाद हम कहलियैन—चारि-पाँच हात भए गेल। माए मोन पड़ैत अछि। घर जाए चाहैत छी। माए के विचार हेतैक तऽ फेर पटना आवब। अइ पर ओ बजलाह—तऽ चल शर्मंगा तक सँ। ओही दिन रातिक जहाज सँ हमरा लोकनि देशक (गाँव) दिन विदा भेलहुँ।

बलचनमा

हमर छोटीकी बहिन रेवनी चौदहम बिता कऽ पन्द्रहम् से पैर राखि चुकल छल। छहरा-मोहरा खुलि बाइल रहे। जवान भऽ रहल छल। दुरागमनक मेह ने बैस छै। हमरा समाज से विवाह पर ओते ध्यान नहि देल जाइत छैक जतेक दुरागमन पर।

हमर भोन रहए जे रेवनीक दुरागमन भऽ जाइक। सुदा हमर माए नहि चाहैत रहैक। ओकर विचार छलैक जे रेवनी अखन सेना अछि। दु-तीन बरख आरो नदहर मे खेलि-खा लिए, फेर तऽ जिनगी भरि गिरहस्तीक पहाड़ माथ पर दोधाक छैहै।

माए जे एना सोचे सकर एक दोसरो कारण रहै। बात ई रहै जे हमरा लोकनि ओहि छोट परिवार मे सब मिलाकऽ लीनिए गोटे रही। सऽ दऽ कऽ हम, रेवनी आ माए। हम सात माए पर चेश मे रहि आएल रही। रेवनीए रहै जकरा छाती लगाकए माए सुतेत रहै। रेवनीक दुरागमनक बाद माए पसमरि भऽ जाइत। हमर रहनाई आ ने रहनाई एके रंग कारण माएक देख-रेख, हिफाजत, खबर गिरि आ परवरिश तऽ हम कऽ सकैत छलियै सुदा रेवनी जकाँ ओकर तहेलीक अमाव्य हटेमाइ हमरा बुलाक बाहर छलै।

हमरा एतवे चिन्ता रहे जे जमीन्दारक गाँव छैक। ई लोकनि लुच्चा होइत छथि। असुर-सहस्रोलक काज गुम्स्ता बराहिलक माथ, घर गिरहस्तीक

देख भात छोटा भाईपर शेखा टहलक काज बहिवा खवासक माथ, शेप बचलाइ बेटा नाती, भाई-भातीज, आ सार-सरबेटा से बैसल-बैसल ताश पीदता, शतरंज खेलता, शहर जाऽ कऽ सिनेमा देखि ओताइ, बेकार भोन शेवानक घर। खेन गिन आ आरामक कमिए नहि, काज कोनो करताइ नहि ककरो बेटी सभान भेले नइ कि निशाना लगावए लगैत छथि। ई नई कि बहिन-बेटी सभक एके रंग होइत छैक। अपन इज्जत आवरु जे सम्हारे तऽ दोसरो के नीक होएत छैक। सुदा हो भाई। जिनका लोकनि केँ धन होइत छन्हि से निपट आन्हर होइत छथि। अपन आन किछु नहि सुभैत छन्हि।

आ हम तऽ मरीच ठहरलहुँ। हमरा लोकनिक शरा आर होइते कि दखि। कमाए-खटऽ लेत ई धूनू हाथ, माए बहिन-बेटीक इज्जत आवरु, मैह ने हमरा लोकनिक धन अछि। मोही कहऽ, हमरा लोकनि एकरो रक्षा नहि करी तऽ ई जिनगी कोन फाजक।

हमर गाँव जमीन्दारक गाँव छल। बड़का घरक कि जवान आ कि बूढ़ सभक ओखि पाप मे डूबल रहैत छैक। दुरागमनक बाद केवो नवकनिया ककरो घर अये तऽ एहि लुच्चा लोकनिक ओखि ओकरा घोषक चारुकात नचैत रहैत छै। जाबत तक बाध-पोन दृष्टि सँ देखि ने लेताइ ताबत एहि धमाश लोकनि केँ राति मे निन नहि हेतेन। कतेक बेरतऽ एहन भऽ जाइत छैक जे जकरा देखए लेल बाप हरान सकरे लेल बेटा परेशान। ताइदिन गालिक सभक राज रहैत। हुनका लोकनिक खिलाफ हो अपन छोटीकी बोंगुर ने छटा-तकितह। ककरो इज्जत आवरु के बेदाग रहए देख हुनका लोकनि के सख नहि छलैन।

हम नई चाहैत छलहुँ जे हमरा बहिनक शरीर पर ओहि लुच्चा लोकनिक हाथ पड़े। हम नई चाहैत रही जे हमर माए अपन बेटीक आमदनीक साधन

बनावे। गरीबी नरक छुड़ हो भाई! नरक चावरक चारि दाना छोटक
बहेलिवा जेना चिड़िया के फसबैले छैक ओहिना ई धनधान मरजू लोकनि
स्वीयक फंसा लेत छथि। हुनका लोकनि के पास पनी होइत छैन्ह आ
बुद्धिओ। हुनका लोकनिक लीला अपरमपार थोक। नमहर खनदानक
अवारा सँ अवारा लोक पण्डित आ पुरोहित सँ भलमनगाइतक परधी पावि
जाइत छथि।

ते हो भाई! हम चाहैत रही जे रेवनी आव अपना मरद के संग रहे।
बाबू लोकनिक एहि बस्ती मे अपना बहिन के रहनाइ हमरा पतीन नहि छल।
छोटका मालिक आ मजिना-मालिक वा दोतर पड़ीक बाबू अवधान ककरो पर
हमरा मरोसा नहि छल। आ आव तऽ हम एतना देखि आएल रही। महेन
बाबू कि राजा नहि छलाइ? हुनका ओहि ठाम कि सुन्दर स्त्री-पुरुषक कमी
छलैन? ओहन जगह पर रेवनी के चारि-छह मास रहि जायब हमरा नहि
जखरहत। महेन बाबूक घरक लोक रूप नीक नजरिक छलाइ। सुवा
एहिठाम महेन बाबूक पलिवार हमरा कोन काज अवेत। एत तऽ छोटका आ
मजिना मालिक रहथि। मलिकानक बेह पड़ी रहैन। होरा बाबू, बुचन
बाबू, मानिकजी, बचोलबाबू, लाकमहेव—मालिकक ढाका भरि साहबजाये
रहथि। एक मऽ एक शैतान। एक सऽ एक मरजू। इतऽ मऽ नहि सकैत
छलै जे हमरा बहिन पर हुनका लोकनिक नजरि नहि रहल होनि।

हमर माए ई बात भइ बुझे, ओकरा मालिक सभ पर वज्र भरोल छलै।
हमभेला सँ ओ एतवे कहइ, पानि मे रहि कऽ मोहि सऽ कगड़ा। जिनका
लोकनिक षंठ खाकऽ तौ एतेकटा भेजेहे हुनके लोकनिक विषय मे एहन-एहन
बात सोचेत छै। अवरम हेतो रे बलचनमा, अवरम। भगवान विमवि जेथुन।
शहर जाकऽ इथाह विद्या सीख एतेइहऽ। सोहर बाबा-आजा तऽ तेही हिनके

बलचनमा

लोकनिक षंठ खाकऽ केरन-फारन पहिर वऽ जिनगी बिता बेलखुन, एहन
बृन्त तऽ धन वेढा।

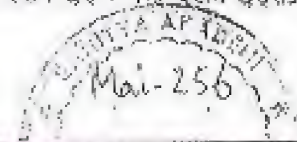
हमर माए ओहिना सोचेक। छोट जातिक दोसर स्वीयनक तेहो मालिक
लोकनिक विषय मे एहने किछु विचार रहैक। खसल अवस्थो मे तऽ ओ लोकनि
मालिके छलाइ। मालिक लोकनि राजा होइत छथि वा राजा भेलाइ
भगवानक अवतार। हुनका लोकनिक खिलाफ के किछु सोचि सकैत छल।

सुवा मजति हमरा बुझैवाक फल ई भेल जे माए किछु सोचवाक हेतु
मजबूर भेल। ओ राजी मंगोल जे रेवनीक दुराग्रमन कऽ देल जाइ।

बैशाखक मास रहैक। ओइ साल जाम नहि फलल रहैक। आव हमरा
पूरा जमोरी भेटऽ लागल। कच्चा जोख मे पूरे चारि सेर धान हमरा जमोरी
मे जाहि दिन माए के भेटलैक ताइदिन ओ आनन्दक धार मे बहि गेल। एहि
इधिया मिथममी केँ ओही खुशी मे ओ आधा सेर धान वऽ बेलकेक। ओइ
राति बखन हम खाए बैगलहुं तऽ बड़ा निनेह सँ माए हमरा पंखा होँकऽ
लागल। ओकरा नजरि मे हो भाई आव हम पूर्ण बादमी भऽ गेल छलहुँ।
छलहुँ ने?

हमरा ओइठाम छोटका जाइत मे महुआक वज्र धावर छैक। कहियो-
कहियो नीनि मे धानक बदला लोक महुए के पसीन करैत छैक। अम्ह
गरीब के जे घोर बहुत उपरारि जमीन होइत छैक ओइमे ओ महुए रोपनाइ
सोन करैत अछि। बैशाख मे पानि पटा-पटाकऽ महुआक बीजा तैयार
करल जाइत छैक। ओकरा नितदिन पाइन चाही, नीत-खेद बीतक भऽ शैला पर
सुपाक बीजा छलाइ जेल जाइत छैक। फेर ओकरा जोतल आ धुरधुरी
मिटवला भीषल खेत मे रोपल जाइत छैक। महुआक इयाम-सलोना डोंट-
पत गँ लहलहाइत खेत तौ कहीं देखने छह। नहि देखने छइतऽ देखि अविहऽ

एजचनमा



येया सोन हरिअर भऽ जइतइ ? धानक हरिअर झँटक अपन करके सोभा छइ तऽ सर्वलिखा बिहारी महुआलाल के अपन फराक ।

घरक बाबू से हमरा शोरक जमीन रहइ । अइखर हम अपने मालिकक पोखरि सँ बेल भरि-भरि कऽ चली । हमर बाबू सेहो अहिना पानि भरि-भरि कऽ महुआ-पटवेत रहथि । सीक पटइ सँ पानि भरवाक अवसर अइ सँ पहिने हमरा कहियो नइ भेटल छल, तइयो जाहि ओश आ उमंग क ओइ बेर महुआक खेती हम कएली से देखिकऽ लोक सब-संग रहि गेल । एमहर कनेक घकावट भुक्तापल तऽ बीड़ी टाँनि लेलहुँ । बीड़ी पीवाक इ हिस्सक पटना मे लागल रहे । अकला पर बीड़ीक एकाध दम थर नीक लगे छइ हो भाइ ! आ फेर हमर तऽ इ हाल अछि जे इ दम खिचली कि फेर मिश्रा देल आ ओइ अवजर बीड़ी के कानपर खोसि लेलहुँ । तीन बेर मे हम एक बीड़ी खतम करैत छलहुँ ।

ओ हमर उपजाइल पहिल फल छल । डेढ़ कट्ठा खेत मे दू पसरी महुआ भेल छल । अपन मेहनतक फल केहन भीठ-होइत छइ । अपन उपजाइल महुआक रोटी सँ भेट तोहर भलेही भरि जाय, इश्वाय नहि मरतह तोहर, ई !

महुआक बाद धान रोपवाक दिन अएले । मालिकक खेत मे दिन भरि हम धान रोपैत रही आ घरक सब काज माए आ रेलनी सम्भारे । आकल-मौवल, मेहनति सँ चूर-चूर जखन सौँक कऽ हम घर आवी तऽ घर मे भोजन तैयार पाबी, हुपहरक भोजन मालिकक बिस सँ खेत मे पहुँचि जाइत छल—दाँलि, भात आ अचार । धरौपनीक दिन से ई लोकनि खेतक जमेक भोजनी करा बैत छलथिन । अइमे दया-मवाक कोनो बात नहि, हुनका लोकनिक अपन खारघ काज करै छैन । अपन-अपन खेत पहिने तैयार करा क्षेत्रक

फिकिर पड़ल रहैत छैन । दूर दूर सँ जन बजाओल जाइत छैक । सबके वज्रा-दादा, कका कहल जाइत छैक । सुगा, राधा आ सुन्नाक घोडो बेल जाइत छैक । पूरा बोनि आ एक बेरक भरि भेट लेनाई कऽ कऽ सब अपन-अपन खेती करैत छथि । ओइताल पहिल बेर हम पूरा बोनि पर धरौपनीक काज कएने रही । छोटकी मलिकाइनक बिछु दिनकलेल नैहर बेल रहथि । नीकरी छोड़ि कऽ मालिक घर बैसल रहथि । खेतीक काज मलिकाइनक भाई-देखैत रहथिन । मालिक बाबू दित भरि किताब आ हरमुनियम मे डूबल रहथि ।

माए हुनका ओइठाम घरक काज पहिने जकाँ अखनो करैत रहै—वासन पोनाई, पानि भरनाई, माहु-बारहनि देनाई, नीपब-पीतथ, चुल्हा जरा कऽ मानम चढ़ा देनाई इबाइ मत्र काज छलैक । काज बेसी नइ, सुदा लपटोनी बढ छलै । लपटोनी माने हुसलहक ही भाइ ? नइ हुमने हेबहक । हो भाई एक होइ छइ काज लेनाई—चटसँ कहलहुँ आ पट सँ काज भऽ गेलैक । दोसर होइ छइ बिचौर-पिसीर कएनाई । घिचिर पिचिर माने होइ छइ अपनी कमट मे पड़ल रहनाई आ दोसरो के ओझरोने रहनाइ । ने अपना समयक कदर आनै दोसरक । बेहात मे जे ननहर लोक कहबैत छथि, हुनका ओइठाम मे काजक मुल्य आनइ कमासुत अटक । हमर बाप-दादा लोकनि दू-दू पहर बैस कए मालिकक अँगूर चटकवथिन । मालिकक छोटी छिन नेनाक पैर घोघस मे हुनका लोकनि के कतेक घंटा लागि जाइत छलैन । बूढ़ा मालिक डेढ़ तमाकुले पुनावऽ मे आधा पहर लागि जाइत छलैन । मुनै बी जे हमर दादा बहुत थड़िया खवासी करैत छलाइ । अपना मालिकक बोली के ओ एहन सेहो कऽ चुनिअवितथि कि कैथो धोती के फूँकिइ सऽ सर सँ छड़ि जाय आ फेर जहिना के तहिना बैस जाय । मालिस ओ एम करथिन कि पागल सँ पागल आदमीक ओखि पर नीन सवार भऽ सैवनि छड़ी

बनावऽ मे रत कोल तक हुनकर यश रहने । सुधा हो भाई । हुनकर तरह-तरीक सब रस चाटिकऽ मालिकक तबवा बर गुलाब बगल रहल होनि, अपन बाल-बच्चा हुनकर शाइते कहियो भरि देह कपड़ा अथवा भरिपेट भोजन कएने हेतने । तीन पुरखाक हाल तऽ हमहू कहि सकैत छिअऽ । मालिकक ऐठक पुन गवैत आ हुनका लोकनिक थिकट-सँ-थिपेट गारि के परेम-भाव सँ सुनैत हम अपना दादी केँ देखल । राति-दिन सेवा करिसे रहलइ । पाव-आध पाव खुद्दीक लेल हमर माए कोना रिरिआइत मुँसे से विनरक बात छइ ? आ अपना बचपनक थोड़ बहुत हाल हग कहिए देने छिअऽ । आब लोही कहह जे हमर तीन पुरखा कीन काज अएला । मालिकक लेल ओला आ मालिकक लेल मरलाह । शहर मे देखलिये केहन पुर्तों सँ लोक काज करैत अछि, केना एक दोतरक मेहनति आ समयक हुनका लोकनिकेँ ध्यान रहैत छनैत । आह, तीन पुस्त पहिने जे आदमी कलकत्ता टाटानगर मेल से ओले बसि गेल । ओकरा लोकनिक बाल-बच्चा सब पढ़ि लीखि मेलैक अछि हो भाई, नौक-निजुत पहिरेत आएत अछि । सब, कारीगर, मिस्त्री, फोरमेन आदि बन गेलै । आ सात पुस्त हमरा ओइ राँव मे रहैत भऽ गेल, फटीचरी मे कोनो फर्क नहि पड़ल । दादी के मुँह सँ सुनने छी, हमर पुरखा पहिने पनिचीम मे बड़िआ-गिरी करैत रहथि । हमरा परदादाक परदादा केँ ओहिठामक एक जमींदार दहेज मे जगाइक संग कऽ देने रहथिन । कहिया सँ लऽकऽ ई सातम पुस्त चीत रहल अछि । दुनिया जहान बदलि गेलैक अछि । मालिक लोकनिक दशा बदलि गेलैत अछि । हमरा लोकनिक गुलामी पर काफ़ी असर पड़लैक अछि सुधा अखनो तक मालिक लोकनिक रहन-सहनक ढंग रहलैत कि राति-दिन हमरा लोकनि हुनका पछा नगिरि हिलचैत फिरैत छलकै । काज ओतेक नहि अते कि

खुशामद । हमरा लोकनिक मुँह सँ दिन मे पचास-पचास बेर मालिक-मालिक, सरकार-सरकार, हजूर-हजूर सुनऽ मे जानि नइ बाबू लोकनि केँ की रस अवेत छलन्हि । आ माएक तऽ किछु पूछइ नइ, ओ तऽ बात-बात मे मलिकाइन-मलिकाइन, सरकार-सरकार रट लगौने रहए । कलकत्ता, मालदह, किमुतमोग आ बम्बई आमक एक कतरा लेल ओ कतेक घंटा तक मलिकाइनक पैर असेत रहैत रहै ।

छोटका मालिक रंगल दिलक आदमी रहथि । चालीस पार कए चुकल बलाह । मीठ-दाढ़ी हाफ । खाल-गुलाबी आ गोल मटील चेहरा एहन सुन्दर लभैत से फि कहिय । माथक केश कारी भुजंग रहैत, अँठिया । ठीक फराक भऽ नहि छलैत । शहरक हवा जे खएने छलाह ? बी० ए० तक पढ़ि कऽ छोड़ि देने छलाह । पहिने किछु दिन सुपौल मे मास्टरी करैत छलाह । बाद मे रौन्ट्जे हजारीबागक दिस कोनो राजाक ओहिठाम भेजरी हाथ लगलैत । जायत तक ओतय रहथि, पोन्तो ओगुर धीमे मे । एमहर दू-तीन मास सँ घर बैसल रहथि । मलिकाइन रहथिन नइ । मोन बढास रहैत ।

एक दिन माएक संग रेवनी सेहो काजपर गेलै । चीकत पीसवाक रहै । माए कहलकै—इ हाथ लगा देवे तऽ जल्दी पीस लेब । मालिक मधुबनी तयथिन, दिनकऽ आसन, दूध आ फुलका खाकऽ । रेवनी सेहो संग गेलै । हुनू माए-बेटी चीकस पीस चुकल तऽ मालिक सोर पारलखिन-रलचनमाक भाए, अरे लोहर बेटी तऽ बड़ि कऽ ताड़ भेल जाइत छी ।

ई कहिकऽ ओ एड़ीचँ शिखा तक रेवनी केँ देखऽ लगलखिन आ नचाकऽ भोखि घुमा देलखिन । सामने दोसर घरक ओसारा पर पलंग पड़ल रहै । पद्मा, चादिर आ गेरुआ, जकरा दूधसन दूध-दूध लज्जर खोलपर लाल-हरियर

होराक कसीदा छलैक—लोश मे लोश भिरोने दूटा सुगग। ओही पर केहुनी रोपने मालिक बेसल रहथि।

आँखि फाड़ि-फाड़ि कऽ ओ रेवनी के देखलखिन। चिकन पीग लेलापर माए संग जखन ओ रेवनीक बात छठोलखिन तऽ ओ कहलफैम—बरची छै बाबू जखन, की खाऽ पी कऽ ओ ताड़ हैकै।

एते कहि कऽ ओ फेर कोनो काज मे लागि गेलैक। नमहर जाति बलाक सोझा मे हमरा घरक माए-बहिन बहुत बम बजैत छैक। ओहू मे सुमय यदि मालिक आ नोकरानीक रहलैक तऽ लिहाज आर बेसी बहि जाइत छैक। मुदा भैया, बड़का लोकक चुलबुली तबियत के एतने मे संतोष कऽ। ओ लोकनि बेकार हमरा लोकनिक घरक स्त्रीमण्डल संभ थिमा वातक बात करवाक बहना तकैत रहैत छथि।

माएक ओहि उत्तर सँ छोटका मालिकक मोन तहि भरलैन। कनी-काशक बाद कहलखिन—तौ जाकऽ आगि जरा बलचनमा माए, रेवनी एमहर आबि कऽ कनी पंखा हौंकि देत। ई धाजि कऽ मालिक एहन पुफकार छोड़लैन जे ब्रुकऽ जेना आगि मे भाँटा। कहिए सुकल छिथ जे हमरा माए के मालिकक नेत पर बड़ा भरोस रहै। ओ हुनका लोकनि के देवताक अवतार बुकैन। अबु ओ आँखि सँ रेवनी के इशारा कएल कैं जे वा कऽ कनी पंखा हौंकि रहन।

पंखा नइ रहै, बियनि रहै जे रेवनीक हाथ मे बड बेल गेलैक आ ओ आँखि नीचा कएने बियनि चलाथऽ लगलैक। बियनि मे नूठक लग घाल बसिक कोपी रहैत छैक। मोल आ चिकन कोपी के भीतर बियनिक काडी पड़ल रहै छैक। मुठो मे लऽ कऽ कनिके डोलएला सँ बियनि अपने अँ चलाऽ लगैत छैक। कि ई फिर, खिर खिर, फिरि-फिरि बड़ मीठ आवाज

होइ छइ हो भाई! बगल में बैग कऽ केओ पंखा चलएतऽ आ तौ पड़ल-पड़ल हवा खाइत रहइ, तऽ तोहर सपन, हो भाई आँखि नइ लागि जाथो तऽ जे कहइ।

रेवनी जखन पंखा चलबै छलै तऽ भई सँ मालिक मेरुआ तर मे हाथ देलनि आ अठनी निकाललनि पलंगक। पोआक माथ चपटल रहै, ओही पर अठनी अऽ देखलिन। रेवनीक आँखि मे लोभक दर्ति नइ रहैक, ओ अठनीक बिस देखथो नइ केलकै। पहिने जकाँ दडिग रहि मालिक के पंखा हौंकेत रहलै। मोन मे सोचलक जे दोकान सँ कोनो चीज बस्तु मँगावऽ चाहैत छथि। अही सँ चुपचाप रेवनी बियनि चलबैत रहलै।

एमहर मालिक के मोन मे तऽ हो भाइ शेतान शिगुर जकाँ शक्कोरैत रहैन। ओ सोचेत छल ऐताइ, हौंड़ी छइकि खोंगइ। नइ हिलै छइ मे होलै छइ। केहल पाथर छइ। हुनका लोकनिक एहन सोचनाई बेकार नइ रहैन। कारण जखन ओ सुथान रहथि तऽ अही गोंध मे एक दुअरी मे सुथान हौंड़ी भेटैत रहै। रेवनी अडिग भऽ कऽ मालिक के पंखा हौंकेत रहलैन। फेर मालिक अठनीक बिस इशारा करैत कहलखिन छठवैत किवाक नहि छै। रेवनी अठनी बिस देखि फेर पंखा हौंकऽ लगलैन। कनी काल डहरि कऽ मालिक सँ ओ पुछलकैन—किछु मँगावऽ के अडि सरकार, शोकान जाइ ?

ई कहैत काल रेवनीक दृष्टि नीचा दिस रहैक। आँखि मे कोनो विकार नइ रहै। एकतऽ अइ अवस्था मे डेटी सब अहिना संकोची होइत छइ भाई, आ हमरा बहिनक तऽ हाले मे पूछइ। नेने सँ ओ शील-संकोचवाची छलि। आँखि मिला कऽ ककरो सँ बातचीत करैत कहियो ओकरा देखे नहि केलियैक। ई जोचि कऽ कि बनेथा, मालिक मुस्वऽ लगलाइ। माथ झिंझऽ

भौंह तानिकड आँखि के नचौलनि। ओ हवा करेत आ रहल छले, हुनक कुचिचार सँ अनासुर्य।

अरत पहिल उमिर मे मालिक खेलल छलाह। एहन अवसर पर चुपचाप टाढ़ या नइ-नइ कहैत बीसो के ओ गह्रा पकड़ने रहथि। ई हुनका लेल एकदम मामूली बात छलैन। छोकड खानेक जकाँ हो भाइ बिरहुल सामूली बात। मनवा घर मे माए घरहर हाँदू सँ सजमनि चौरैत रहै। जनबे करैत छहक वड़ा आरमीक अँगना बड़ीटा होइत छैक। चाक दिस घर होइत छैक, बीच मे खुलता जागहवा अइ खासी जागह केँ अँगना कहैत छैक। पोखरि जकाँ चौकोर पर आँगन हो देखने हेबहुक। सोफा-सोफा घरक बीच अतेक दूरी रहैत छैक। ओइ ओसारा पर केओ आस करैत तऽ एमहर बलाकेँ किछु मुगड मे नइ अएत। अइ ओसारा पर छोमासक वच्चा कंठ फाड़ि-फाड़ि कऽ मरि जाएत तऽ ओइ ओसारा पर बेसल माए के किछु पता नहि चलैत। काज-परोजत मे परोसक हजारी बामन पौडी मे बैत कऽ भोजन करैत छथि। पचास-पचास मोन धान मुखाए लेल पतारि देल जाइत छैक। एतेकटा-टा अँगना होइत छैन्ह लमीनदार लोकनि केँ।

तऽ ही माई! मालिक के इमरद अवसर सुमलनि आ बट वऽ रेवनीक गह्रा पकड़ि लेलखिन। हाथ भटकि कऽ फुरती सँ रेवनी दू डेग पाछा भऽ गेल, हुनक जे केओ ओकरा माथ पर एक सुप आगि राखि देमे होइक। पंखो हाथ सँ छुटि गेल रहैक। चीखक बदला हलुक हाथ सुनि मालिक एकरा नाटक बुझलखिन आ पलंग सँ ऊठि कऽ आगौं बढ़लह।

माए मे माए—रेवनी बफारि तोरि कऽ भायल तऽ मालिक लनटे जोर सँ तोर पारलखिन—कहाँ गेलै मे बलचनबाक माए, तोरा बेटी केँ तऽ भूत आगि गेलैक अछि। एक हाथ मे हाँदू आ दोसर मे झीलल सजमनिक भाँक

तऽ कऽ माए बहिनवरिआ घर सँ बाहर गेलै तऽ रेवनी बेतहास दोड़ि ओकरा सँ चिनटि गेलै—मे माए मे माए! ओ शैलान सेहो आँगन मे किछु दूर बड़ि आपल रहै आ मुखाएल गला सँ खिलखिलाइत रहै।

हमर माए एहन हक बक भऽ गेल कि आँखि फाड़ि कऽ रेवनी दिस मान देखि रहल छल। एमहर मालिक अपन चालि बदललनि। अपन दिहना हाथ हिला-हिलाकऽ जोर सँ चीकरइ लगला-होम् होम्। बाप रे बाप! धिरनी काटि लेलक।

रेवनी के छोड़ि कऽ माए दोड़ि अरलै। अही बीच मालिक अपना बाँहि पर आने सँ बिठुआ काटि लेलनि, कि चेन्ह निकलि आवे। एकरा बाव ओ माए सँ कहलखिन दू बुन्द मटिया लेल तऽ लाड।

अपना ओइठाम बिरनी कटला पर मटिया लेल लगबैत छैक। घर मे मटिया लेल रहबे नइ करै। ई बात मालिक के बुझल रहैन। अरत माए के ओ कहलखिन दोड़, कतौ सँ बुन्द भरि मटिया लेल तऽ आ। ओमहर बहिनवरिआ ओसारा पर बैस कऽ रेवनी लिपकि रहल छल। आँगन फेर मुन्न भऽ गेलै कारण माए मटिया लेल लाबए चलि गेल रहैक। लग मे थाबि कऽ मालिक रेवनी सऽ कहलखिन—एगली कहाँ के! भेली कि तोरा? हम तऽ अहिना तोरा छूबि देने छलिको आ होँ करन गिसाची खेलऽ कगलै। तोरे एतेकटा उमरि मे तोरा माएक दुरागमन भेल रहैक। आ अहिना पचीसी बेर हम ओकर हाथ पकरने हेबे—.....

मूठ-ओष मे हुनकि कऽ रेवनी जज्ञाव देलकैन—आहाँ भूठ बजैत छी! एतेक कहिनऽ ओ उठि डाड़ि भेल। दूगू हाथ पसरि कऽ आमा सँ मालिक ओकरा घेऽ चाहलखिन। रेवनीक भौं अइबैर लनि गेलैक, चेहरा पर घृणा भरि गेलैक। हिम्मत बान्हि कऽ ओ कहलकैन—ई की भऽ गेल बाह

आहों के मालिक ?.....

सरकार...सरकार...। मालिक पहन हंसी, हमलानि कि रेवनीक होश गुम भइ गेलें। तामसक आ बलजोरीक ई खिलखिलाहट पंद्रहसालक ओइ अवधि छोड़ोके लेल बिल्कुल नव वस्त्र रहैक भैया, एकदम नव वस्त्र।

हर सँ ओकर करेन काँपइ लगलें, सेना काँपइ लगलें, जेना केराक चिकन पात बगलक हलुक सिद्धक पावि कइ काँपि उठैत छैक। कनोकासक लेल बेचारिक होश गुम भइ गेलैक। अचेत जकाँ भइ गेल। मुदा रहल ठाढ़।

अनचोके रेवनीक भीतर बिगड़ी जकाँ कोपक लहरि दोड़ि गेलैक। ओकर अंग-अंग कुकड़ जे कन-कन उठकइक, आँखि मे लाली चढ़ि अइलैक। छाती धड़कइ लागलैक आ दोड़ फइइ लागलैक।

मालिक अपना हुन मे मस्त रहिय। ओ राखइ तब कइ ने ने छल जे अइ अइ छोड़ी केँ अछुत नइ छोड़व। बहुत दिन सँ हुनकर आँखि हमरा बहिन पर लागल छलैन। ओ अक्सर सकैत छलाह। आ देखक इच्छा, आइ अइ शोतान केँ अक्सर भेटल छलैक। एक सभ्युक मुँह सँ हम बहुत बढ़िया पद सुनने छलहुँ भैया। मुदा आव मोम कई अई। ओ पदक माने इयाह छलैक जे कामिनी आ कंचनक पाँछा ककरो मोन अखन खिचाइ छैक तखन ओकरा ऊपर एक से बोलल दालक निशा चढ़ि जाइत छैक। से भैया ओइ दिन हमरा छोटका मालिक पर से बोललक निशा चढ़ि गेल रहैक। अपन होस-हवास के गवाँ देने रहिय।

अनत मे जबरदस्ती ओ नीचा मे रेवनी के पटक दिहलिन आ ओकरा देहभर कावू करक कोशिश करए लगलाह। पन्द्रह वर्षक ओ अशोध आ अवशाय कन्या अपन सम्पूर्ण ताकति नटोरि कइ ओइ पसत दशा मे सेहो लोकबिता करइ लागल। कुकुर आ बिलाइक लहरै तौ कहियो देखलक

अछि। वैह हाजत रहैक। हुनर बहिन हारल नइ। ओ मालिकक गटा पर एते जोर सँ दौत गइल देखलैक कि समुर अचेत भइ गेलैह आ रेवनी बिजलीक फुटी सँ छडि कइ भागि आएल।

एकराबाद जे बवंडर छठलैक ओ हमरा जीवनक रस्ते बदलि देलक।

बात ई भेलैक जे छोटका मालिक एकदम आगि बबूला भइ गेला। मदिआ तेल लइ कइ माइ अखन हुनका लग गेलैन्ह तइ ओइ बेचारिक पीठ पर ओ कमिकइ चारि लात मारलखिन्ह। माइ कानल नहि अईचकइ रहि गेल। रेवनी केँ जखन ओ ओइ ठाम नइ देखलकै तइ कोनो मारि बन्देसा न ओकर माथ चकराए लगलैक। छोटका मालिकक एहि राखइसी स्वभाव के ओ नहि जनेत हो, से बात ने रहै। ओ सब जनेत रहै। बेचारीक बेहरा लगर भइ गेलैक। आ आँखि नोर सुखा गेलैक। आँगन के कुन पावि कइ मालिक पाछा ओकरा पावि भरक रखी सँ हाथ पीठ पलंगे सँ रानिह देलकै। आब ओ फूटि-फूटिक कानल लागल तइ मालिक पुरा कइ कहलखिन—बाबू साही, अपना बेटी केँ एतइ लइ अइवे कि नइ बाध।

ओ बेचारी की जवाब दितैक। अपन जानक हर सँ लोक कि नइ बलि जाइत अछि। मुदा हमर माए बहुत दिलेर रहए। हमरा दाइ जकाँ बात-बात मे ओ दौत निमोड़ नहि जाने। मोनक कगड़ाव नहियो भेला पर अपन इज्जत आ बानीक ओ बहुत पछा छल।

ओइ दिन ओहनो दशा मे कोनो तरहें मालिक हमरा माए सँ कोनो तरहक भजन नइ लइ सकला। ओकरऊपर बहुत पिटाई पकल रहैक। कुहरि-कुहरि कइ समय फटलक। खेलक-खेल नोर नइलक, तइयो ओ नोडरि मारनि अइ शर्त पर माझिकक जेल सँ नइ छुटइ चाइलक जे ओ हुनका ओइठाम रेवनी केँ लइ कइ

आवत। ओ पाछां भीर भरल बाँखि तँ कानि-कानि कऽ ओ कहलक—बबुआ वालचन ! मरि रोनाइ लाख दुन नीक मुदा इज्जतिक सोदा केनाइ नीक नहि।

अपन माएक मुँह सँ एहन बात सुनि कऽ हमर छावी छड़ा गेल। भागबंसे के एहन माए भेटैत छैक भैया। हमहूँ ई ठानि लेलहुँ चाहे उजड़ि जाए पड़ए, चाहे जइल-बाबुल भऽ जाए, चाहे फौसी चली, मुदा कहियो ओह जालिम के आगौं माथ नइ छुकायब।

हम ओई दिन घर पर नइ रही, बाहर गेल रही। दूर नइ, लगे दू अढ़ाई कोस। बात इ रहै जे महाराज खॉन बहादुर नहुआ खॉ दुशतीक बड़ा शोकित रहथि। नवाबी खानदानी रहथि। बहुत बड़का जमींदारी रहैत। इलाका मरि मे इध दूटा खानदान रहैक जे कइएक सौ घरख सँ राज करैत चलि अवैत रहैक। एक खनदान इबाह हमरा मालिक रहैत, जा दोसर खान बहादुरक। हमरा मालिकक बहुत जमींदारी बिका गेल रहैत। बसे-पाँच हजार गालाना आमदनीक भोजे बाँखि गेल रहैत। ई छोटबिन जमींदारीओ बेटि कऽ एकदम छोट भऽ गेल रहैक। गोरुह आनाक सरकार छोट-छोट पट्टीमे बँटैत, एकनौ, अछनौ, पैसा, पाँच-कोड़ी दू-कोड़ी आ आधा कोड़ी तक भऽ गेल रहैक। हमरा मालिकक एहन एक पट्टीक मालिकक नाँव पचकोड़ी बाबू रहैत। एक दोसर पट्टीक कोनो बाबूक नाम तिनकोड़ी बाबू रहैत मुदा नवाबी खानदान। जमींदारी अखन तक ओहिना रहैक। पुरनका रोब दान आब महपूराबलाक नइ रहि गेल छलैन। तइयो पचास साठि हजार रुपया ससील बसा जमींदारीक जेहन रोब होवक चाही से तऽ रहबे करैक।

खान बहादुर केँ दुशती लड़वाक बड़ा शोक रहैत। बूढ़ा पहलवान छ ओ अपने पोतने छलाह। हुनकर कहब छलैन जे हाथीक बदला पहलवान

पोसबाक चाही। सवारीक काल तऽ बग्गी टम-टम सँ चला लेल जा सकैत अछि मुदा अखारा मे अखन दू पैतराबाज दू पट्टा बगना मे खपटैत अछि तखन ज आनन्द देखऽ बला केँ भेटैत छैक से हाथी पोतऽ बलाकेँ की खाकऽ भेटैतैक।

तऽ हम ओईदिन महपूरा बंगल देखऽ गेल रही। फिरलौतऽ सौम भऽ गेल रहैक। गोंबक बाहरे चुन्नी सँ भेट भेल। ओ हमर नकोटिया सँकी रहए। वैह पहिने हमरा टोकलक—के ! वालचन !

पाइनक नाला रहैक। ओइ मे लाठी बोपिकऽ ओकरहि बले हम बाहर टपि अएलीं आ जबाब दलियैक—हँ चुन्नी, अखेर भऽ गेल। महपूरा सँ आवि रहल छी।

खूब कुरती देखने हेयऽ, केँ जोड़ा छली ? हम आगौं बढिकऽ कहलियैक नीता, तौतऽ मेबे नहि कएलाह। सोरा तऽ ने अपना महीम तऽ छुट्टी भेटैत छह बाबे महरानी सँ। महीम फोलेत छह तऽ महरानी बान्हल रहैत छथुन आ महारानी के चखैत छह तऽ महीम बान्हल रहैत छह।

हमरा हँती आवि गेल। जोर सँ भभा कऽ हम हँति पड़लहुँ, मुदा बचाव मे चुन्नी चुप रहल। हम सोचलहुँ-अन्हार छह, चुन्नी मुस्काइत अछि। फेर पुछलियैक—बजैतनइ छह ? भोजी दुलत्ती मारलखुन अछि ? चोट लागल छह तऽ चलह हम मालिश कऽ देत छिअह। पटना सँ सीछ बएलहुँ अछि।

आब हम एक दोमराक लग आवि गेल रही। माँकि कऽ हम देख-लियैक, चुन्नीक मुँह बड़ उदात्त रहैक। पूजल ठोर मे सँ उज्जर दाँत सेहो दहातीक ताबूत देत रहैक। लाठी केँ बगल मे दबा कऽ दूर हाथ सँ हम चुन्नीक कान्ह ककमोरि पुछलियैक—की बात छैक ? एतेक काल सँ तो चुप किपाक छह ? कोनो नबबात तऽ नइ भेलैथ ? तइयो चुन्नी किछु नहि

माजल। स्थिर से हमरा हाथ के अपना कान्ह से छोड़वैत कहलक—
किछु नहि।

एतेक बाजि चारि डेग आगौ बड़ि चुन्नी फेर लैक गेल। हमर मोन
तऽ पहिने खटक गेल रहल, बाप सन्देह पका भऽ गेल जे दीस परोस में
कोनो जरूर खराब बात भऽ गेलैक अछि। बाप हमरो चुहलबाजी समाह
भऽ गेल बा कोनो खतराक अनदेशा काँट बनिऽ मोन के बेध लागल।
चारिडेग हमहू आगौ बड़ि चुन्नीक आगौ ठाढ़ भय गेलौ आ कहलियेक
हमर शपत कहऽ की भेलैया। महीस से तऽ तोहर ककरो खेत में चलि गेल
छलैक। मालिकक कोनो छोड़ा बात ने तऽ कहि देलकह अछि।

एतथी पर चुन्नी चुप रहल। खासी हमर हाथ पकरि ओही ठाम एक-
पेरियाक कात में पोखरीक भीड़ पर धम्म से बैस गेल। हमहू बैस गेलहुं।
मोन हमरो भारी भऽ गेल रहे। कनीकाल हम दूनु चुप रहलहुं, फेर चुन्नी
बाजल, फुम फुमार-तो घर नइ जाऽ। क्रिया-ए—अँखि फाड़ि कऽ आ हम
साथिकऽ हम ओकरा दिस देखऽ लगलियेक। ओ घोड़बहि में मोमबत्ता
सब बात हमरा कहि देखल आ फेर कान्ह पकरि कऽ कहऽ लागल—बालचन,
आइ दिन भरि छोटा मालिकक हरबाह-चरबाह तोरा तकैत फिरलकी।
पचीसौ आदमी सँ ओ तीरा विषय में पुछलखिन कहौ गेल बलचनमा!
भैया, कनीकाल तौ अही ठाम बैल, हम दीसा फिरि कऽ अबैत छी फेर तोरा
अपना ओइदाम ल जाएथी।

हमरा पैरक नीचा में माटि दटऽ लागल। अँखिक आगा अन्हार पर
लेलक। हम ओक बनि गेलहुं। हमरा बोहि हाथ में छोड़िकऽ चुन्नी सीरा
फिरऽ लागल। टेहुन पर कपार राखि हम गुम-गुम ओहिना बैसल रहि
गेलहुं। हमरा मोन में किसिम-किसिम के भाव उठैत छल। एक मोन तऽ

ई होइत छल पवरिया होख लऽ कऽ दुपहर राति में जाइ या छोटा मालिकक
के घेंट काटि आवी। दोसर मोन ई होइत छल जे मालिकक कागजक ओइ
बंडल के खडा लायी जाइ में हजारक तमसुक आ सैक दस्तावेज राखल
छैक। तेसर बात जे मोन में उठए ओ ई जे माए बहिन के राता-रातो लऽ
कऽ पटना चलि जाई। चारिम बात इहो मोन में उठल जे अहिदाम सँ
इनटे दरिमंगा चलि जाइ एतगरे ओतए जाए फूल बाबू सँ छोटा मालि-
कक सब करनी कहि दी। अइसरहें किसिम-किसिमक बात हमरा मोन में उठि
रहल छल। एहन विझी में हम कहियो नहि बदल छलहुं। भैया, छोटा
मालिकक विषय में ऊँच विचार तँ हमर कहियो ने रहल, हुदा आदमी एहन
ताकत होएत, ई तऽ तपनो में नई सोचै छलक। एतेक काल में चुन्नी दीसा
फिरि कऽ पछुआ करऽ लागल। आवाज अबैत छल—छपर छप्प—छपर-छार-छप्प।

अइ आवाज सँ हमरा किछ होइ आएल आ हम सम्हरि गेलहुं जे चुन्नी
सँ सेहो पूछि ली। एतगर दिनाम किछु कात नइ कऽ रहल छल। मोन
विररक खर भऽ रहल छल।

हाथ पैर पाँ कऽ कुहर कऽ चुन्नी ऊपर पोखरीक भीड़ पर, जतऽ हम
देखल छलहुं आएल। हमर कान्ह बोला कऽ ओ कहलक—पगलपन सँ तऽ
किछ हेतइ नइ, उँदा मान सँ नीचि विचारि कऽ आ दोस मीस सँ राय-
स्वाह कऽ कऽ ठीक करबाक चाही जे एहि राखस के हमरा लोकनि कोना
बनाए करी।

चुन्नीक इ बात हमरा नीक दुआएल। दोल-महीम, हिल-बन्धु तोरा सब
गम भेटलऽ भाई? जतए अपन बुद्धि काज नहि करए ओतए हीस-मीत सँ
सब लेबेक चाही। एक आदमीक बुद्धि तँ दस आदमीक मिलल-जुलल
बुद्धि लागल गुना बड़िया छैक। हमरा एहि समय में किछु नहि सुद्धि रहल

छल। चारु दिस चुप्प-अन्हार बुझाईत छल। कोड़-करेज धर-धर कंधै छल। एहन दशा मे चुन्नी हमर तहारा भेल आ हम छकि कऽ डाढ़ भेलहुँ। जो कहलक—तौड़ घाट पर जो आ हाथ पैर धो आ। हाथ-पैर-मुँह धोला सं थकान सेहो हटती आ मोन सेहो हलुक भऽ जाएतो।

लाठी ओकरा थमा कऽ हम पौखरिक घाट दिस बढ़लहुँ। नीचा देखल भरि पानि मे पैर कऽ हाथ मुँह धोएलहुँ। खसारि कऽ गला साफ कएलहुँ। रगरि-रगरि कऽ बुझी आ पैर धोएलहुँ। ओखि-नाक, कपार, कान, कनपटी, गरदन, आ पाँजुर पर भोजल हाथ फेरल आ बाहर निकलि अएलहुँ। चुन्नी ताबत तक डाढ़े छल। फेर हम दूनु गोटे आगों गामक दिस बढ़लहुँ। ओ आगों-आगों आ हम पाछों पाछों।

चुन्नी हमरा सोझ नहि आयल। मालिकक पटी सँ फराके-फराक गोसाँईजीक भीड़ खेतक आरि पर भऽ तीरी अमातक धरक पछुआर देने ओ हमरा अपना घर लऽ गेलइ।

भाई, तौड़ लऽ देहाते के रहऽ बला छऽ। जनवै करैत छहक जे देहातक लोक सब साँझ-सवेरे खा-पी कऽ छुति रहैत छैक। बुढ़ पुरनिया तऽ राति मे बड़ी काल तक खँसैत-खोखैत रहैत छैक वा अन्हारि मे अपन धितलाहा दिनके मोन धारि कऽ विभोर भए बतिवाइत-वतराइत रहैत छैक। दिनक मेहनति सँ चुर-चुर बुझान आ अवेड़ लोकनि बहुत पहिने सुइत रहैत छथि। खेतीक समय नइ रहल तऽ बेकारी मे सुतेत-ओषिवाइत दिन बितैत छन्ह आ राति क जल्दी नहि सुतेत छथि। लोरिक, बिरहा, सल्लैस आ कवीरक भजन गवैत रहैत छथि आ फेर कोनो चौपाई पर पुथारक बीड़ी पर बैसि तो हुनका लोकनि के समाकुल मलैत आ चिलम फुकेत देखबहुन। स्त्रीगण सब बेर तक जगेत रहै छथि आ तड़के छठि जाइ छथि।

चुन्नीक बाप मनियार मंडल मामूली दंगक गृहस्थ रहथि। वयन पहिल उमिरक सात बरख तक दादाक कोनो चटकल मे भजूरी कऽ कऽ काकी रूैया ओ चुन्नीक माए के पठौने रहथीन। चुन्नीक माए दिनका छोटे उमिर लऽ हम धन्नी काकी कहक अम्पल भऽ गेल रही; बड़ा लछमिनिया रहैक। वयन घरबलाक कमाइ सँ धीरे-धीरे ओ तीन बीघा खेत लऽ नेने रहए। आव ई लोकनि छोटका जातिबला मे हैसियत बला बूझल जाइत रहथि। बुझले जाइत रहथिसे नहि, हैसियत रहनि। दू महीस, एक जोड़ा बरद आ अँगन मे चारु दिस धर रहैत। कमाए-खटाए बड़ा सीन समर्थ जवान रहैक। मज-बूत काडीक दूटा कमाहुत स्त्रीगण रहैक। बेर बखत पर सलाह देबाक लेल बूढ़ रहैक। लछमिनियाँ बूढ़ रहैक। हमरा अइसम एहन परिवार के भरल-पूरल परिवार कहैत छैक।

बोइ राति कतौ बिरादरी मे भोज रहैक। चुन्नीक दूनु भाई आ बुढ़क अपने बाल-बच्चा के सह लऽ कऽ पात गरमा गेल रहथि। भानसक झंकटि नइ रहला सँ जनी-जाइत सब परोसिबाक अँगन मे गप्प लड़ानऽ गेल रहथि दरवाजा पर महीस आ बरद बान्हल रहैक। बेसार खाली रहैक आ घर सुन्न।

एहन समय मे पैर मारिकऽ हम दूनु बोइ अँगन मे हुकलहुँ। चुन्नी अपना पुवरिया धरक केवार कोसि कऽ कहलक—आराम करइ, हम भोजनक इन्जाम करैत छी आ तोरा माएक समाचार सेहो लऽ अबैत छी।

चुन्नी चलि गेल। हम अपन लाठी कोना मे भीतक अवज्ञेमा दऽ डाढ़ कऽ बैलियेक। गंजी निकालि कऽ असगनी पर टांगि देलियेक। धोतीक फेंटा कनी दील कऽ लेलहुँ आ ओछाएल सितलपाटी पर अन्हार मे परि रहलहुँ। बड़ा भूख लागल रहए भाई। सुदा जे किछु भेल रहैक ताहि कारण भूख सुखा कऽ अंतरीक कोनो कोन मे छुसिया गेल छल। हमर दाइ एक बेर

कहिने रहे—बहुत जास्तो खुशो हो तर्पो भूख भेटा चाहत छैक । से ओइ दिन हवर भूख उठि गेल । हम बेर-बेर एसगर ओइ अन्हार मे इएह सोची के छोटका मातिक सँ डटि कऽ ओर्त्ता लेबऽ बिना निस्तार नहि । बात काह रहैक । इ मे सँ एक, चाहे अपना बहिन के ओइ जालिम के हाथ कऽ बी अथवा मुपीबदक पहाड़ खुरी-खुरी माथ पर उठाली । हेमर कोनो रास्ता नहि । मोने-मान पका कऽ लेलहुँ जेल चलि जायब, फौनी चढ़ि जायब, पाँव सँ लजड़ि जायब मुदा एहि शैतानक आगां सपनी मे माथ नहि झुकाएब । भैया हम उठि कऽ बैस रहलहुँ । डोंड़ सोछ कऽ लेलहुँ । ओइ कुप्य अन्हार मे हम अपना मुदरक छौंर साफ-साफ देखऽ लगलहुँ । ओइ राक्षस के लल-कारैत हम बाजि गरिपहुँ—बेएक, हम गरीब छी । तोरा संग अपन धन, कुल-खानदान बाप दादाक नाँव, बरोम-बरोमक ज्ञान-गुहचान, आ जिला-जवार मे मान छो आ हमरा संग किछु नहि अछि । मुदा आखरी देम तक हम तोरा विरुद्ध डटल रहब । अपन सम्पूर्ण ताकति के तोरा विरोध मे लगा देब । माए आ बहिन के बिप दऽ देब । दिनु तो ओकरा लोकनि के अपन रखेली बनेबाक भगना कहियो पूर्ण नहि कऽ सकबे.....

हम बैसल नहि रही सकलहुँ । भीतर सँ निकलि आकन मे घूमि फिर करए लगलहुँ । लोकलकताक चिबिया घर देखने छह भैया ? ओतए जाहि पिजड़ा मे शेर रहैत छैक से देखने हेबहक शेर जखन भित्तिएल रहैत छैक तऽ क्रोध सँ ओकर आँखि लाल रहैत छैक आ ओ पिजड़ा मे बन्द रहैत छैक तऽ कि करैत छैक ? इएह कि अपन पिजड़ा मे पाँच डेग एमहर आ पाँच डेग ओमहर, कहना क्रोधक आँच के घूमि-दिर कऽ पचबैत अछि । से भैया, हमहुँ अपना क्रोधक आँच मे चुन्नीक ओइ छोट-छिन आँगन मे फेरा लगा कर पचावए लगलहुँ ।

अरे, तौ चकर लगा रहल छै—चुन्नीक आवाज आएल तऽ हमरा ध्यान

डूटल । ओकरा एक हाथ मे रोटी रहैक आ दोसर मे कटोरा । हमरा किछु पुछबा सँ पहिने ओ वाजल—रेवनी सुति रहल छैक आ चाची (हमर माए) पड़ल अछि । हम ओकरा लोकनि के समझा बुझा देलियैक अछि । तोरा विषय मे निश्चित कऽ देलियैक अछि । ले पीढ़ी पर बैस जोड आ खाले हम डोल कऽ टटका पानि भरि लबैत छी ।

हम नहि बैसलहुँ तऽ चुन्नी हाथ पकड़ि कऽ बेधा देलक । रोटीक नमहर इकड़ी तोरि कऽ आ तरकारी बला कटोरी मे हुयाकऽ चुन्नी हमरा मुँह मे कौंचि देलक । मिरचाइ हम नेने सऽ कनी कम जाइत छी मुदा रामभिमनीक ओइ तरकारी मे बनावडवाली नदजानी कतेक मिरचाइ झोंकि देने रहैक । मिरचाइक अधिक फल स्वाद हमर निशा के तोरि देलक । निशे कहियऽ भाइ, कारण मोनक देखेनी, दिमागक परेशानी आ भीतरक बेकली मनुष्य के ओहिना बेहोश कऽ देत छैक जेना दारू आ तारी ।

तऽ तरकारीक करु सँ हमर ध्यान डूटल, हम पुछलियैक—तौ कि छएबह ?

हम तऽ खा कऽ पोखरिक दित गेलहुँ । छोटका सहीसक मोन खराब छैक । गरमी सऽ गेलैक अछि । अही वास्ते अतिया भोज मे नहि जा सकलहुँ छैक दिनके राखल छलैक । तोरा वास्ते रामचरन ककाक घर सँ रोटी लेलियह अछि । हुनका ओहिदाम बुढ़ियाक पथ-पानि लेल सतति आगि जरिते रहैत छैक ।

चुन्नी टटका पानि लऽ आएल रहे । रोटी जो के रहैक । रामभिमनीक तरकारी आ जो के रोटी बहुत बढ़िया लागैत छैक, मुदा ओइ राति तऽ हमर जीमे घयरा गेल रहए जेना-जेना गिर कऽ भरि इच्छा पानि पीलहुँ आ बाहर जा कऽ लम्बी कऽ अएलहुँ । हम चुन्नी सँ बात करऽ चाहैत रही, मुदा ओकरा कोनो जरूरी काज सँ बमनडौली जएबाक रहै । ओ कहलक भखन आराम करह । भोरे हमरा लोकनि छठब आ तखन गप्प होयत ।

हम बहुत कालतक गुनगुन मे पड़ल रहलहुँ । किसिम-किसिमक बात सोचैत रहलहुँ आ ओहि सोच किकर मे बत्ता नद कखन नीन आविगेल ।